घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 269- गुरूवार 30- जुलाई 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

पेपर लीक रोकने का सख्त कानून लोकसभा में पास

इसमें 7 साल की सजा,10 करोड़ तक जुर्माना,राज्यसभा में वंदेमातरम से जुड़ा संशोधित बिल पास

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। लोकसभा में पेपर लीक से जुड़ा 'लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक,2026 बुधवार को ध्वनि मत से पास हो गया। बिल पर मंगलवार को 9 घंटे चर्चा हुई। बुधवार को विपक्ष की तरफ से राहुल गांधी बिल पर 50 मिनट बोले। विपक्ष के हंगामे के बीच बिल पास हुआ। इसके तहत पेपर लीक से जुड़े कानून सख्त कर दिए हैं। अब पेपर लीक से जुड़े अपराधों में अधिकतम 10 साल तक की जेल और 10 करोड़ रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। वहीं राज्यसभा में राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण संशोधन विधेयक (2026) बिल पास हो गया। अब जन-गण-मन की तरह वंदे मातरम को कानूनी संरक्षण मिलेगा। वंदे मातरम का अपमान, अनादर और गायन में बाधा डालना दंडनीय अपराध होगा।

राज्यसभा में वंदे मातरम् के अपमान को अपराध बनाने वाला बिल पास

राज्यसभा में वंदे मातरम् के अपमान को दंडनीय अपराध बनाने वाला विधेयक पारित कर दिया। इस कानून के तहत वंदे मातरम् का अपमान करने पर कानूनी कार्रवाई का प्रावधान किया गया है।

राहुल बोले...शाह ने फायरिंग का आदेश नहीं दिया तो सदन में आएं

लोकसभा में अपने भाषण के बाद राहुल गांधी ने संसद परिसर में कहा...गृह मंत्री शाह सदन में नहीं आए,जबकि उन्हें छात्रों पर हुई पुलिस कार्रवाई पर जवाब देना चाहिए था। राहुल ने कहा...अगर गृह मंत्री ने कोई आदेश नहीं दिया है,तो उन्हें सदन में आकर साफ

जितेंद्र सिंह बोले...गोली चलाने का आदेश गृहमंत्री नहीं देते...

राहुल जी ने कहा कि शाह के साथ 30 गाड़ियों का काफिला था। इन्हें ये नहीं पता कि गृह मंत्री के साथ 30 गाड़ियां नहीं चलतीं और शाह विदेश नहीं गए हैं। तथ्यों के बिना गैरजिम्मेदारी से सदन में ये बातें कहना और फिर निकल जाना ये किसी नेता प्रतिपक्ष का व्यवहार हो ही नहीं सकता। 21 जुलाई को नेता प्रतिपक्ष पीएम आवास के बाहर जाकर बैठ गए। इनकी हसरत है कि देश इनको पीएम बनाए। लेकिन इनका सपना पूरा नहीं हुआ तो ये पीएम आवास के बाहर जाकर बैठ गए। जब इन्हें समझाया गया निवेदन किया कि आप यहां से हट जाइए। तो इन्होंने कहा कि मुझे उठा लिया गया।

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह बोले...विपक्ष बिल पर राजनीति कर रही...

बिल पर बोलते हुए केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि विपक्ष बिल के नाम पर राजनीति कर रही है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने जिन अपशब्दों का इस्तेमाल किया वे असंसदीय हैं। माननीय सदस्य खुद को भी इडियट समझें तो वह नहीं कर सकते। उन्हें नियमों की जानकारी नहीं है। यदि वे व्यक्ति विशेष के लिए ये शब्द नहीं बोल रहे तो क्या छात्रों के लिए ये शब्द थे। और यदि छात्रों को इडियट कहा जाए तो इससे दुर्भाग्यपूर्ण कुछ नहीं है।

देनी चाहिए कि उन्होंने ऐसा कोई निर्देश नहीं दिया। सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे संसद में बोलने का अधिकार है और वह अधिकार मुझे मिलना चाहिए। राहुल ने कहा,'गरीब बच्चों से लाखों लाख रुपए लिए गए। एक परीक्षा में पेपर लीक होता है। दूसरे में कुछ और दिक्कत होती है। ये बहुत गलत है। सिस्टम पर आरएसएस का कब्जा हो चुका है।' राहुल ने कहा, 'राजनाथ सिंह ने कहा कि हम यूपीए नहीं हैं,हमारे मंत्री कभी इस्तीफा नहीं देते। वे सही कह रहे हैं। धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा दिखावटी है क्योंकि धर्मेंद्र प्रधान ने कभी शिक्षा मंत्रालय नहीं चलाया। शिक्षा मंत्रालय को चलाने वाला संगठन आरएसएस है।'कांग्रेस सांसद ने आगे कहा,'छात्र असल में इसलिए नाराज हैं क्योंकि उन्हें भारत में

प्रियंका के बचाव में वेणुगोपाल बोले...किसी पर व्यक्तिगत हमला नहीं हुआ...

कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी पर प्रियंका गांधी के बयान का बचाव किया। उन्होंने कहा कि यह किसी पर व्यक्तिगत हमला नहीं था। कांग्रेस सिर्फ छात्रों और उनके अभिभावकों के हित का मुद्दा उठा रही है। वेणुगोपाल ने कहा...हम छात्रों के मुद्दे को सबसे बड़ी प्राथमिकता के साथ उठा रहे हैं। सरकार के पास हमारे सवालों का कोई जवाब नहीं था, इसलिए वह जवाब देने के बजाय पलटवार कर रही है। उन्हें जो करना है करें, लेकिन हम छात्रों का मुद्दा उठाते रहेंगे।

वंदे मातरम के अपमान पर अब 3 साल तक की जेल...

राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण संशोधन विधेयक (2026) बिल के तहत 1971 के मूल अधिनियम में संशोधन का प्रावधान किया गया है। नए कानून में राष्ट्रगीत के अपमान के लिए तीन साल तक की जेल या जुर्माना या दोनों के प्रावधान हैं।

छात्र बने रहने,अपने जुनून को फॉलो करने, अपनी बात कहने और अपने मन के सवाल पूछने की इजाजत नहीं है। उन्हें वह बेतुका इतिहास मानना पड़ता है जिसकी कल्पना आरएसएस करता है।'

संसद में इडियट और अंधभक्त बोल गए राहुल गांधी,जमकर हंगामा

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी एंटी पेपर लीक बिल पर बोल रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा कि देश का भविष्य सड़कों पर उतरा। बीजेपी में भी जो लोग हैं, हमारे उन मित्रों को जाकर अपने बच्चों से पूछना चाहिए कि क्या गलत हुआ। आंदोलन से बीजेपी नेताओं के बच्चे भी सहमत होंगे। प्रदर्शन में गुस्सा, नफरत नहीं थी। देश के युवाओं का सम्मान होना चाहिए। छात्रों को सड़क पर उतरना पड़ रहा है। वे हमारे देश का भविष्य हैं। छात्रों की भावनाओं को देश ने समझा। युवाओं का गुस्सा जायज है। युवाओं को आप इडियट कहते हैं। छात्रों पर हर भारतीय को गर्व है। छात्र समझ रहे हैं कि दुनिया कैसे बदल रही है।युवा सच्चाई के पीछे दौड़ता रहता है। उसके लिए सच्चाई मीठी होती है। युवा खुले दिल,खुले विचारों के हैं। जिसे सीखने की ललक है, वही छात्र है। राहुल गांधी ने कहा कि मैंने सोचा, इडियट भी है और स्टूडेंट भी है। उससे पूछा कि ये तीसरी कैटेगरी कहां जाती है...अंध भक्त। ये तीन कैटेगरी हैं। छात्र जो हैं, वह शिक्षा के सिस्टम की बात कर रहे हैं। स्टूडेंट आठ-10 घंटे पढ़ते हैं। एजुकेशन महंगी है। वर्षों पढ़ते हैं। इस पर ट्रेजरी बेंच से सदस्यों ने जोरदार हंगामा किया। इस पर आपत्ति करते हुए कहा कि राहुल गांधी असंसदीय शब्द इस्तेमाल नहीं करते हैं। ये तरीके से एक छात्रा के नाम पर वह शब्द बोल रहे हैं। इसे एक्सपंज किया जाए। स्पीकर ने कहा कि जो शब्द असंसदीय होगा,उसे निकाल दिया जाएगा। राहुल गांधी ने कहा कि इडियट शब्द की जगह मैं दूसरा शब्द दे देता हूं। इस पर स्पीकर ने कहा कि इसके लिए आपको व्यवस्था देने की जरूरत नहीं है, मैं व्यवस्था दे चुका हूं। राहुल गांधी ने कहा कि छात्र सजग है, सच्चाई जानता है। एक परीक्षा पर शिक्षा के बजट से ज्यादा खर्च होता है। अंधभक्त मूर्ख को भगवान मानते हैं।

दानपेटी लेकर संसद पहुंचे सपा सांसद,केंद्र सरकार पर लगाए गंभीर आरोप

राम मंदिर में कथित चढ़ावे और दान चोरी के आरोपों को लेकर बुधवार को समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसदों ने संसद भवन परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। सपा सांसद हाथों में दानपेटी और पोस्टर लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाज़ी करते नजर आए। प्रदर्शन में सपा प्रमुख अखिलेश यादव,सांसद डिंपल यादव और पार्टी के कई अन्य सांसद शामिल हुए। सपा नेताओं ने आरोप लगाया कि मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाए गए दान की सुरक्षा सुनिश्चित करने में सरकार विफल रही है। अखिलेश यादव ने कहा कि जो सरकार मंदिर की दानपेटी की सुरक्षा नहीं कर सकती, वह देश और युवाओं का भविष्य कैसे सुरक्षित रखेगी। उन्होंने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए जवाबदेही तय करने की मांग की।

भारत बाघ संरक्षण में दुनिया का नंबर-1,देश में 3,682 बाघ

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि भारत ने बाघ संरक्षण के क्षेत्र में अपनी वैश्विक नेतृत्व की स्थिति को और मजबूत किया है। देश में अब दुनिया के लगभग 75 प्रतिशत बाघ मौजूद हैं। ताज़ा आंकड़ों के अनुसार,भारत में बाघों की संख्या 3,682 तक पहुंच गई है,जो देश के 58 टाइगर रिजर्व में फैले हुए हैं। यादव ने अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस के मौके पर बुधवार को एक्स पोस्ट में कहा कि बाघों की बढ़ती संख्या भारत के जंगलों की बेहतर स्थिति और वन्यजीव संरक्षण के प्रति लगातार किए जा रहे प्रयासों का प्रमाण है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि देश में संरक्षण संबंधी नीतियां और पहल प्रभावी रही हैं। उन्होंने कहा कि बाघों और उनके प्राकृतिक आवास की सुरक्षा के लिए उसकी प्रतिबद्धता आगे भी जारी रहेगी। जंगलों से जुड़े स्थानीय समुदायों की आजीविका को सशक्त बनाने और उनके हितों की रक्षा के लिए भी निरंतर प्रयास किए जाएंगे।

चंपत राय इस्तीफे में 81 लाख बरामदगी का खुलासा

अयोध्या,29 जुलाई 2026। अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट में रामलला के दानपात्र से हुई कथित चढ़ावा चोरी के मामले में नया खुलासा सामने आया है। इस हाई-प्रोफाइल प्रकरण में ट्रस्ट के पूर्व महासचिव चंपत राय और पूर्व ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्रा का संयुक्त इस्तीफा पत्र सार्वजनिक हुआ है। इस पत्र में दोनों पूर्व पदाधिकारियों ने घटना से जुड़े कई महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख किया है।पत्र में बताया गया है कि दानपात्र की राशि में हुई गड़बड़ी के बाद आरोपी युवकों और उनके परिवारों से कुल 81 लाख रुपये की राशि वापस लेकर ट्रस्ट में जमा कराई गई थी। इसके साथ ही मामले की गंभीरता को देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार से एसआईटी (विशेष जांच दल) से जांच कराने का अनुरोध भी किया गया था। संयुक्त इस्तीफा पत्र के अनुसार,राम मंदिर के दानपात्र में रखी गई राशि में गड़बड़ी की घटना जून महीने के पहले सप्ताह में सामने आई थी। घटना के बाद जब मीडिया में इससे जुड़ी खबरें सामने आने लगीं तो श्रद्धालुओं के बीच चिंता और असंतोष का माहौल बन गया था। पत्र के मुताबिक,4 जून की रात दानपात्र में जमा चढ़ावे की गिनती के दौरान कुछ युवकों द्वारा धनराशि चोरी किए जाने की जानकारी ट्रस्ट के एक सदस्य को मिली थी। इसके बाद मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू की गई। घटना के अगले दिन यानी 5 जून को ट्रस्ट की ओर से सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग की जांच की गई। जांच के दौरान कुछ युवकों की संदिग्ध गतिविधियां सामने आईं। फुटेज के आधार पर उनकी पहचान करने की प्रक्रिया शुरू की गई।इसके बाद संदिग्ध युवकों से पूछताछ की गई, जिसमें उन्होंने कथित तौर पर चोरी की घटना में अपनी भूमिका स्वीकार की।

कोयला घोटाला में पूर्व पीएम मनमोहन सिंह पर केस बंद

सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई क्लोजर को मंजूरी दी कहा...क्लीन चिट के बाद फिर जांच शुरू हुई थी

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के खिलाफ कोयला ब्लॉक आवंटन मामले में चल रहा क्रिमिनल केस बंद कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने 12 साल बाद सीबीआई की 2014 की 2 क्लोजर रिपोर्ट को मंजूरी दे दी। कोर्ट ने कहा कि पूर्व पीएक के खिलाफ करप्शन के कोई ठोस सबूत नहीं हैं। यह मामला यूपीए सरकार के कार्यकाल के दौरान तलाबीरा-2 कोयला ब्लॉक के आवंटन से जुड़ा है। साल 2015 में विशेष सीबीआई कोर्ट ने एजेंसी की क्लोजर रिपोर्ट को नामंजूर कर दिया था। कोर्ट ने मनमोहन सिंह और अन्य आरोपियों को ट्रायल का साम
ना करने के लिए तलब किया था। इस आदेश को पूर्व प्रधानमंत्री ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। तब से मामला कोर्ट में था। डॉ. सिंह का 26 सितंबर 2024 को 92 साल की उम्र में निधन हो गया था।

मध्यप्रदेश में गरमाया मूंग आंदोलन : हजारों किसानों ने डाला डेरा,केंद्र को लिखा गया पत्र

मध्यप्रदेश,29 जुलाई 2026। मध्यप्रदेश में मूंग की 100 फीसदी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की मांग को लेकर किसानों का आंदोलन लगातार तेज होता जा रहा है। नर्मदापुरम से भोपाल तक मार्च करके पहुंचे करीब 2000 किसानों ने राजधानी के सावरकर सेतु के पास डेरा डाल दिया है। संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले हो रहे इस प्रदर्शन में किसान अनाज की बोरियां,बिस्तर और राशन लेकर पहुंचे हैं। पुलिस की तमाम बैरिकेडिंग और सख्ती के बावजूद किसान अपनी मांगों को लेकर पीछे हटने को तैयार नहीं हैं और वे मुख्यमंत्री आवास तक मार्च करने की जिद पर अड़े हुए हैं। प्रदर्शन कर

रहे किसानों का मुख्य आरोप है कि वर्तमान में तय किया गया खरीद का लक्ष्य बहुत कम है, जिससे बड़ी संख्या में अन्नदाता परेशान हो रहे हैं। किसानों की मांग है कि मूंग की पूरी फसल की खरीद की जाए और ई-टोकन व्यवस्था की दिक्कतों को तुरंत दूर किया जाए या पूरी तरह खत्म किया जाए। किसानों ने साफ कर दिया है कि जब तक सरकार उनकी मांगों पर ठोस फैसला नहीं लेती, तब तक वे राजधानी में ही डटे रहेंगे और उनका आंदोलन शांतिपूर्ण तरीके से जारी रहेगा।

आंदोलन को लेकर सरकार का रुख

यह पूरा मामला तब गरमाया जब राज्य में इस साल मूंग का बंपर उत्पादन हुआ। कृषि विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, इस साल 14 मई से 3 जुलाई के बीच करीब 8.06 लाख मीट्रिक टन मूंग का उत्पादन हुआ है,जबकि केंद्र सरकार ने फिलहाल केवल 4.54 लाख मीट्रिक टन खरीद का ही लक्ष्य तय किया है। मध्य प्रदेश देश के कुल मूंग उत्पादन में लगभग 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखता है, यही वजह है कि किसानों का यह मुद्दा राज्य के राजनीतिक गलियारों में चर्चा का बड़ा केंद्र बन गया है।

राहुल गांधी ने छात्रों पर पुलिस कार्रवाई के लिए अमित शाह को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली,29 जुलाई। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने छात्र आंदोलन के दौरान दिल्ली में हुई कथित पुलिस कार्रवाई के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्हें पद से हटाने की मांग की है। राहुल ने यह भी कहा कि वह आज लोकसभा में दिए अपने बयान पर किसी भी स्थिति में माफी नहीं मांगेंगे। उनका आरोप है कि प्रदर्शनकारी छात्रों पर पैलेट गन और लाठीचार्ज की कार्रवाई गृह मंत्रालय की जानकारी या अनुमति के बिना संभव नहीं थी। राहुल गांधी ने बुधवार को यहां कांग्रेस मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यदि वह आज लोकसभा में माफी मांग लेते तो उन्हें लोकसभा में अपनी बात रखने की अनुमति मिल जाती,लेकिन वह ऐसा नहीं करेंगे। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा दिल्ली की सड़कों पर छात्रों के साथ हुई कथित बर्बरता है। उन्होंने आरोप लगाया कि 20 जुलाई को छात्र आंदोलन के दौरान दिल्ली पुलिस ने छात्रों पर पैलेट गन का इस्तेमाल किया और लाठीचार्ज किया। उन्होंने कहा कि सरकार लगातार पैलेट गन के इस्तेमाल से इनकार कर रही है, जबकि घायल छात्र इसके इस्तेमाल की बात कह रहे हैं। इस पूरे मामले में केवल दो ही संभावनाएं हैं। पहली, गृहमंत्री अमित शाह ने पैलेट गन और लाठीचार्ज के आदेश दिए हों, तो वह इसके लिए जिम्मेदार हैं।

छात्रों के मुद्दे पर सरकार को अल्टीमेटम जल्द बड़े आंदोलन का ऐलान....

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। कॉंकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके ने एक बार फिर केंद्र सरकार और पुलिस प्रशासन को चेतावनी देते हुए बड़े शांतिपूर्ण प्रदर्शन के संकेत दिए हैं। उनका आरोप है कि आंदोलन समाप्त होने के बावजूद प्रदर्शन में शामिल छात्रों को अब भी परेशान किया जा रहा है। सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा किए गए अपने संदेश में दीपके ने कहा कि यदि छात्रों के खिलाफ कथित कार्रवाई नहीं रुकी, तो संगठन जल्द ही देशव्यापी शांतिपूर्ण आंदोलन आयोजित करेगा। दीपके ने स्पष्ट किया कि हाल ही में आंदोलन समाप्त होने का मतलब यह नहीं है कि संगठन की लड़ाई खत्म हो गई है।

उनका कहना है कि सरकार द्वारा संगठन की एक प्रमुख मांग स्वीकार किए जाने के बाद धरना समाप्त किया गया था, लेकिन शिक्षा व्यवस्था में सुधार और युवाओं से जुड़े मुद्दों पर कॉंकरोच जनता पार्टी का अभियान लगातार जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि संगठन को अभी लंबा सफर तय करना है और यह केवल एक नई शुरुआत है।

ओडिशा में बाढ़ के हालात...1 लाख लोग हटाए गए,महानदी पर बना हीराकुड बांध लबालब,छत्तीसगढ़ में भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। देश के विभिन्न हिस्सों में हो रही भारी बारिश से बाढ़ के हालात बन गए हैं। छत्तीसगढ़ के पड़ोसी राज्य ओडिशा के उत्तर-पूर्वी जिलों में गहरे दबाव के कारण हुई मूसलाधार बारिश से नदियों का जलस्तर बढ़ गया है,जिससे कई इलाकों में पानी भर गया और बाढ़ आ गई है। जिसके चलते एक लाख से ज्यादा लोगों को सुरक्षित जगहों पर शिफ्ट किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में एक सप्ताह से भारी बारिश हो रही है। जल संसाधन विभाग के अनुसार,महानदी पर बने हीराकुड बांध के डिस्चार्ज गेट बंद रखे गए हैं। छत्तीसगढ़ में लगातार बारिश होने से महानदी का जलस्तर और

बढ़ने का अनुमान है। ओडिशा के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी ने समीक्षा बैठक के बाद बताया कि गहरे दबाव के कारण नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। बालासोर,भद्रक और जाजपुर जिलों के लिए अगले 24 घंटे बेहद नाजुक हैं। क्योंझर, सुंदरगढ़ और संबलपुर को भी संवेदनशील घोषित किया गया है। ODRAF, NDRF और अग्निशमन सेवाएं राहत और बचाव कार्यों में जुटी हैं। मुख्य सचिव अनु गर्ग ने स्थिति की निगरानी के लिए तीन वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों को तैनात किया है। बाढ़ प्रभावितों के लिए राहत शिविर स्थापित किए गए हैं, जहां पका हुआ भोजन, सूखा राशन और शिशु आहार दिया जा रहा है। सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस की रात्रि गश्त बढ़ा दी गई है। बालासोर,भद्रक, जाजपुर, मयूरभंज, सुंदरगढ़ और क्योंझर जिलों में सभी स्कूल,कॉलेज और शैक्षणिक संस्थान बंद कर दिए गए हैं।

'एक अधिकारी, एक गाड़ी' नीति लागू,अफसरों के लिए कई सरकारी वाहनों पर केंद्र की रोक

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। केंद्र सरकार ने सरकारी संसाधनों के बेहतर उपयोग और अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण के उद्देश्य से सरकारी वाहनों के आवंटन को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। नए निर्देशों के अनुसार अब किसी भी पात्र अधिकारी को केवल एक ही सरकारी स्टाफ कार उपलब्ध कराई जाएगी। यदि किसी अधिकारी के पास किसी अन्य मंत्रालय, विभाग, सार्वजनिक उपक्रम या स्वायत्त संस्था का अतिरिक्त प्रभार भी होगा,तब भी उसे दूसरी सरकारी गाड़ी नहीं मिलेगी। सरकार का मानना है कि इस व्यवस्था से सरकारी वाहनों के दुरुपयोग पर प्रभावी रोक लगेगी।

वित्त मंत्रालय ने जारी किए संशोधित निर्देश : मीडिया रिपोर्टों के अनुसार वित्त मंत्रालय ने एक कार्यालय ज्ञापन जारी कर सभी मंत्रालयों और विभागों को संशोधित नियमों का सख्ती से पालन

करने का निर्देश दिया है। आदेश में स्पष्ट किया गया है कि जिस अधिकारी को उसके नियमित पद के लिए पहले से सरकारी स्टाफ कार आवंटित है,उसे अतिरिक्त जिम्मेदारी मिलने की स्थिति में दूसरी सरकारी कार उपलब्ध नहीं कराई जाएगी। यह नियम सभी केंद्रीय मंत्रालयों,विभागों, संबद्ध कार्यालयों,अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों पर लागू होगा।

संसाधनों के बेहतर उपयोग पर रहेगा जोर

सरकार का उद्देश्य सरकारी वाहनों का अधिक प्रभावी और पारदर्शी उपयोग सुनिश्चित करना है। कई मामलों में एक ही अधिकारी के पास अलग-अलग जिम्मेदारियों के कारण एक से अधिक सरकारी वाहन उपलब्ध हो जाते थे,जिससे सरकारी संसाधनों पर अतिरिक्त बोझ पड़ता था। नए नियम के माध्यम से इस व्यवस्था को समाप्त कर वाहनों के उचित उपयोग को बढ़ावा दिया जाएगा।

अनुपयोगी वाहनों को सुरक्षित रखने के निर्देश

वित्त मंत्रालय ने यह भी कहा है कि जिन सरकारी वाहनों का नियमित उपयोग नहीं हो रहा है,उन्हें सुरक्षित तरीके से रखा जाए। इससे वाहनों के रखरखाव पर होने वाले अनावश्यक खर्च को कम किया जा सकेगा और आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रभावी उपयोग सुनिश्चित होगा। सरकार का मानना है कि इस कदम से सरकारी परिसंपत्तियों का बेहतर प्रबंधन संभव होगा।

पीएसयू और स्वायत्त संस्थाओं की गाड़ियों के उपयोग पर भी रोक : नए निर्देशों के तहत केंद्र सरकार के अधिकारी अब सार्वजनिक उपक्रमों,अर्ध-सरकारी संस्थाओं या स्वायत्त निकायों की स्टाफ कारों का नियमित उपयोग भी नहीं कर सकेंगे। केवल आधिकारिक दौरे या विशेष सरकारी कार्य के दौरान ही ऐसे वाहनों का इस्तेमाल किया जा सकेगा। इस फैसले का उद्देश्य विभिन्न सरकारी संस्थाओं के संसाधनों के अनावश्यक उपयोग को रोकना है। यह नया आदेश सितंबर 2022 में व्यय विभाग द्वारा जारी सरकारी स्टाफ कारों के उपयोग संबंधी दिशा-निर्देशों को और अधिक प्रभावी बनाता है। ताजा निर्देश में सभी मंत्रालयों और विभागों से संशोधित नियमों का पूरी गंभीरता से पालन करने को कहा गया है। यह आदेश केंद्रीय मंत्रालयों, विभागों, वित्तीय सलाहकारों और केंद्रीय मंत्रियों के निजी सचिवों सहित संबंधित सभी अधिकारियों को भेजा गया है। संशोधित व्यवस्था का मुख्य आधार 'एक अधिकारी, एक सरकारी गाड़ी' का सिद्धांत है। सरकार का मानना है कि इससे सरकारी वाहनों के आवंटन में दोहराव खत्म होगा और संसाधनों का उपयोग केवल अधिकृत सरकारी कार्यों के लिए ही सुनिश्चित किया जा सकेगा।

संपादकीय

सरगुजा में कानून का राज बनाम अपराध का साया

क्या समाज समय रहते सचेत होगा?

सरगुजा लंबे समय से छत्तीसगढ़ के अपेक्षाकृत शांत और सामाजिक सौहार्द वाले क्षेत्रों में गिना जाता रहा है। लेकिन यदि किसी क्षेत्र में संगठित अपराध, बाहरी आपराधिक नेटवर्क,रंगदारी,संरक्षण शुल्क (प्रोटेक्शन मनी),अपहरण अथवा अपराधियों के प्रभाव की चर्चा होने लगे,तो यह केवल पुलिस के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए चिंता का विषय बन जाता है।

हाल के समय में विभिन्न राज्यों में सक्रिय संगठित अपराध गिरोहों के प्रभाव, सोशल मीडिया के माध्यम से धमकी,डिजिटल नेटवर्क और आर्थिक अपराधों पर देशभर की कानून-प्रवर्तन एजेंसियाँ लगातार कार्रवाई कर रही हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भी पुलिस और केंद्रीय एजेंसियाँ यह मान चुकी हैं कि संगठित अपराध केवल हथियारों से नहीं,बल्कि आर्थिक नेटवर्क,स्थानीय सहयोग और डिजिटल संपर्कों के सहारे मजबूत होता है।

इसी संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या किसी भी अपराधी नेटवर्क को स्थानीय स्तर पर सामाजिक या आर्थिक संरक्षण मिलना चाहिए?

उत्तर स्पष्ट है—नहीं...

किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति तब तक निर्दोष माना जाता है जब तक न्यायालय उसे दोषी सिद्ध न कर दे। इसलिए किसी भी आरोपी के संबंध में अंतिम निर्णय न्यायालय का ही होता है। यही संवैधानिक व्यवस्था है और इसका सम्मान होना चाहिए। लेकिन दूसरी ओर यह भी उतना ही सत्य है कि यदि किसी फरार आरोपी को जानबूझकर शरण देना,उसके लिए संसाधन उपलब्ध कराना,उसकी सूचना छिपाना या उसके आर्थिक एवं सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करना सिद्ध हो जाए,तो ऐसी परिस्थितियों में भारतीय कानून के अंतर्गत स्वयं सहयोग करने वाले व्यक्ति की भूमिका भी जांच के दायरे में आ सकती है। यह सिद्धांत केवल किसी एक राज्य का नहीं बल्कि पूरे देश की आपराधिक न्याय प्रणाली का हिस्सा है।

आज अपराध का स्वरूप भी बदल चुका है...

एक समय था जब अपराधी केवल मोबाइल कॉल या प्रत्यक्ष मुलाकातों के माध्यम से संपर्क करते थे। अब एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग एप,सोशल मीडिया,इंटरनेट कॉल,डिजिटल भुगतान,वर्चुअल नंबर और विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों का उपयोग बढ़ा है। इसके समानांतर डिजिटल फोरेंसिक विज्ञान भी अत्यधिक विकसित हुआ है। जांच एजेंसियाँ केवल संदेशों की सामग्री पर निर्भर नहीं रहतीं, बल्कि उपलब्ध कानूनी प्रक्रिया के तहत डिवाइस, कॉल रिकॉर्ड, लोकेशन पैटर्न, नेटवर्क विश्लेषण,डिजिटल उपकरणों और अन्य तकनीकी साक्ष्यों को मिलाकर जांच करती हैं। इसलिए यह मान लेना कि कोई भी डिजिटल माध्यम पूर्णतः जांच से परे है, वास्तविकता से मेल नहीं खाता।

हालाँकि यह भी उतना ही आवश्यक है कि सोशल मीडिया पर चल रही प्रत्येक चर्चा या आरोप को स्वतः सत्य न मान लिया जाए। किसी भी व्यक्ति, संस्था या व्यवसाय के विरुद्ध आरोप तभी स्वीकार्य माने जा सकते हैं जब उनके समर्थन में विश्वसनीय तथ्य,दस्तावेज या न्यायिक प्रक्रिया के अनुरूप साक्ष्य उपलब्ध हों। केवल अफवाह,अनुमान या सोशल मीडिया पोस्ट किसी को दोषी सिद्ध नहीं करते।

सरगुजा जैसे क्षेत्र के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि यहां कानून का शासन केवल कागजों तक सीमित न रहे,बल्कि आम नागरिक अपने आपको सुरक्षित महसूस करें। व्यापार भयमुक्त वातावरण में हो,निवेश विश्वास के साथ आए और युवा अपराध के बजाय अवसरों की ओर बढ़ें।

यह जिम्मेदारी केवल पुलिस या प्रशासन की नहीं है। समाज,व्यापारी, जनप्रतिनिधि,मीडिया और आम नागरिक–सभी की समान भूमिका है। यदि किसी को किसी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी है तो उसका उचित माध्यम से पुलिस को सूचित करना नागरिक दायित्व है। वहीं किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध बिना प्रमाण सार्वजनिक आरोप लगाने से भी बचना चाहिए।

अंततः संगठित अपराध का सबसे बड़ा सहारा हथियार नहीं,बल्कि समाज की चुप्पी और स्थानीय सहयोग होता है। यदि समाज कानून के साथ खड़ा रहे, जांच एजेंसियाँ निष्पक्ष एवं पेशेवर ढंग से कार्य करें और न्यायिक प्रक्रिया स्वतंत्र रूप से आगे बढ़े,तो कोई भी आपराधिक नेटवर्क स्थायी रूप से मजबूत नहीं हो सकता। सरगुजा की पहचान शांति,विकास और सामाजिक सद्भाव से है। यह पहचान किसी भी कीमत पर भय,रंगदारी और अपराध के साये में नहीं बदलनी चाहिए।

कॉकरोच आंदोलन : गांधीवाद की छाया या डिजिटल युग का नया प्रतिरोध?

डॉ.प्रियंका सौरभ
हिसार, हरियाणा

भारत में जब भी कोई नया जन-आंदोलन उभरता है,उसे पुराने वैचारिक फ्रेमों में समझने की कोशिश होती है। कॉकरोच आंदोलन के साथ भी यही हुआ है। कुछ लोग इसे युवाओं के असंतोष की नई अभिव्यक्ति मानते हैं,तो कुछ इसे गांधीवादी परंपरा की छाया में पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में इस आंदोलन को महात्मा गांधी की प्रसंगिकता से जोड़ा जा सकता है,या यह केवल एक आकर्षक किंतु सतही तुलना है?

इस प्रश्न का उत्तर न तो पूर्णतः हाँ है और न ही नहीं। कॉकरोच आंदोलन में गांधीवादी राजनीति के कुछ तत्व अवश्य दिखाई देते हैं,किंतु उसका स्वभाव, भाषा,माध्यम और वैचारिक संरचना गांधीवाद से स्पष्ट रूप से भिन्न है। इसलिए इसे गांधीजी की परंपरा का सीधा विस्तार मानने से पहले उसकी प्रकृति और सीमाओं को समझना आवश्यक है। गांधीवादी राजनीति की सबसे बड़ी शक्ति उसका नैतिक अनुशासन था। सत्य, अहिंसा,आत्मसंयम,जनसेवा और रचनात्मक कार्यक्रम–ये केवल राजनीतिक नारे नहीं थे,बल्कि आंदोलन की आत्मा थे। गांधी के लिए संघर्ष का उद्देश्य केवल सत्ता परिवर्तन नहीं था,बल्कि व्यक्ति और समाज के नैतिक रूपांतरण की प्रक्रिया भी था। इसी कारण उनके आंदोलन में साधन और साध्य के बीच गहरा सामंजस्य दिखाई देता है।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

इसके विपरीत,कॉकरोच आंदोलन की शक्ति उसकी व्यंग्यात्मकता,प्रतीकात्मकता और डिजिटल सक्रियता में निहित है। यह ऐसे दौर में सामने आया है, जब नई पीढ़ी पारंपरिक राजनीतिक भाषाओं से दूरी बना रही है और सोशल मीडिया,मीम,डिजिटलअभियानों तथा सार्वजनिक प्रदर्शनों के माध्यम से अपनी असहमति दर्ज करा रही है। यह आंदोलन दर्शाता है कि आज का युवा अपने असंतोष को पुराने राजनीतिक ढाँचों के बजाय नए सांस्कृतिक प्रतीकों और संचार माध्यमों के जरिए व्यक्त करना चाहता है। इस दृष्टि से यह समकालीन प्रतिरोध की नई शैली है,पारंपरिक सत्याग्रह का पुनरावर्तन नहीं।

फिर भी गांधीवादी प्रसंग से इसका संबंध पूरी तरह अस्वीकार नहीं किया जा सकता। गांधीजी ने राजनीति के केंद्र में सामान्य नागरिक को स्थापित किया था। उन्होंने यह विश्वास जगाया कि किसी भी परिवर्तन की वास्तविक शक्ति जनता की चेतना,उसके श्रम और उसके नैतिक साहस में निहित होती है। कॉकरोच आंदोलन भी इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण है कि उसने युवाओं की बेरोज़गारी,परीक्षा-प्रणाली की विश्वसनीयता,संस्थागत जवाबदेही और शासन के प्रति बढ़ते अविश्वास जैसे प्रश्नों को सार्वजनिक विमर्श के केंद्र में ला दिया। इस स्तर पर यह जन-भागीदारी की वही ऊर्जा उत्पन्न करता है, जिसे गांधीवादी राजनीति का मूल तत्व माना जाता है।

किन्तु यहीं सबसे महत्वपूर्ण अंतर भी सामने आता है। गांधी के लिए साधनों की पवित्रता सर्वोपरि थी। उनका विश्वास था कि अनुचित साधनों से उचित लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। दूसरी ओर, कॉकरोच आंदोलन का स्वर अधिक तीखा,व्यंग्यप्रधान और तात्कालिक है। वह व्यवस्था को चुनौती तो देता है,किंतु गांधी की तरह आत्मानुशासन,आत्मबल और वैचारिक संयम पर उतना बल नहीं देता। उसकी भाषा प्रतिरोध की भाषा है, तपस्या की नहीं। इसलिए उसे पूर्णतः गांधीवादी कहना उसकी अपनी विशिष्ट पहचान को धुंधला कर देता है।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि गांधीवाद केवल विरोध की राजनीति नहीं था। वह ग्राम-स्वराज,स्वदेशी,श्रम की गरिमा,सामाजिक समरसता,सांप्रदायिक सद्भाव और रचनात्मक राष्ट्र-निर्माण की व्यापक अवधारणा था। इसके विपरीत,कॉकरोच आंदोलन का वर्तमान फोकस मुख्यतःशिक्षा,रोजगार,युवाओं की आकां क्षाओं और संस्थागत उत्तरदायित्व तक सीमित दिखाई देता है। इसलिए इसे गांधीवाद जैसी व्यापक सामाजिक परियोजना कहना अभी जल्दबाज़ी होगी। फिर भी दोनों के बीच एक गहरी समानता अवश्य है–दोनों जनता की चुप्पी को तोड़ते हैं। गांधी ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सामान्य भारतीय को बोलना सिखाया था। आज का यह आंदोलन युवाओं को यह विश्वास दिलाता है कि असंतोष केवल निजी निराशा नहीं है;उसे लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति भी दी जा सकती है। जब युवाओं की समस्याएँ डिजिटल मंचों, सार्वजनिक प्रदर्शनों और सामाजिक संवाद के माध्यम से सामने आती हैं, तब यह लोकतंत्र की जीवंतता का संकेत होता है। राजनीति समाप्त नहीं हुई है;उसने केवल अपने नए माध्यम और नए प्रतीक खोज लिए हैं।

इसलिए गांधीजी की प्रसंगिकता यहाँ प्रत्यक्ष प्रेरणा के रूप में कम और एक नैतिक कसौटी के रूप में अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि कॉकरोच आंदोलन गांधीवादी है या नहीं; बल्कि यह होना चाहिए कि क्या यह आंदोलन जनता की नैतिक चेतना को जागृत करता है? क्या यह केवल क्षणिक असंतोष का विस्फोट है या किसी दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन की भूमिका तैयार कर रहा है? क्या इसकी व्यंग्यात्मक शक्ति लोकतांत्रिक सुधारों में परिवर्तित हो पाएगी?

इन प्रश्नों के उत्तर समय देगा। अभी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस आंदोलन को गांधीजी से जोड़ना आंशिक रूप से उचित है,यदि हम इसे जन-भागीदारी,नागरिक असहमति और जवाब देही की मांग के संदर्भ में देखें। किंतु यदि इसे सत्याग्रह,अहिंसा, आत्मसंयम और नैतिक पुनर्निर्माण की कसौटी पर परखा जाए,तो यह गांधीवाद से अलग दिखाई देता है। यह गांधी का उत्तराधिकारी नहीं,बल्कि डिजिटल युग की नई विरोध-संस्कृति का प्रतिनिधि है।

निष्कर्षतः,किसी भी जन-आंदोलन का मूल्यांकन केवल उसके प्रतीकों या लोकप्रियता से नहीं,बल्कि उसके उद्देश्य, साधनों,नैतिकता और दीर्घकालिक प्रभाव से किया जाना चाहिए। यदि कोई आंदोलन जनता को जागरूक करता है,सत्ता से जवाबदेही मांगता है और लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत करता है,तो वह गांधीवादी विरासत के कुछ तत्वों को स्पर्श अवश्य करता है। किंतु यदि उसमें सत्य, अहिंसा,आत्मानुशासन और रचनात्मक सामाजिक परिवर्तन की व्यापक दृष्टि का अभाव है,तो उसे गांधीवाद का विस्तार कहना उचित नहीं होगा। इसलिए तथाकथित कॉकरोच आंदोलन को गांधीवाद का पुनर्जन्म नहीं,बल्कि डिजिटल युग की नई विरोध-संस्कृति के रूप में समझना अधिक समीचीन होगा। इतिहास अंततः यही तय करेगा कि यह क्षणिक असंतोष था या लोकतांत्रिक चेतना का एक स्थायी अध्याय।

असम की उफनती नदियाँ और मानवता के मध्य संघर्ष के पीछे प्राकृतिक आपदा या मानवीय भूलों की भूमिका

दुर्गेश्वर राय,गोरखपुर,उत्तरप्रदेश

असम में एक बार फिर प्रकृति ने अपना विकराल रूप दिखाया है,लेकिन अब धीरे-धीरे हालात सुधरने लगे हैं और जीवन अपनी पुरानी पटरी पर लौटने का कठिन संघर्ष कर रहा है। बाढ़ का प्रकोप अब कम हो रहा है और राज्य में सबसे अधिक प्रभावित जिलों की संख्या घटकर केवल छह रह गई है,जिनमें शिवसागर, गोलाघाट,चराइदेव,जोरहाट,नागांव और कामरूप महानगरपालिका शामिल हैं। फिर भी,इक्कीस राजस्व सर्किलों के अंतर्गत आने वाले लगभग छह सौ इकतीस गाँवो में चार लाख पैंतालीस हजार से अधिक लोग अभी भी इस जल-प्रलय के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव का सामना कर रहे हैं। यद्यपि राज्य के अधिकांश हिस्सों में बाढ़ का पानी कम होने लगा है तथा प्रशासन और अधिकारी प्रभावित क्षेत्रों में राहत तथा पुनर्स्थापन कार्यों में पूरे मनोयोग से जुटे हुए हैं। शिवसागर जैसे ऐतिहासिक शहर में,जहां दारिका और दिखौ नदियों का पानी अब उतर चुका है,सामान्य स्थिति बहाल करने के प्रयास तेज कर दिए गए हैं। हालांकि शहर के कुछ वार्डों से पानी पूरी तरह नहीं निकला है,फिर भी अधिकांश हिस्सों में बिजली आपूर्ति का बहाल होना एक सकारात्मक और उम्मीद जगाने वाला संकेत है। राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल की मुस्तैदी से आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ प्रभावित लोगों के बीच राहत सामग्री का वितरण निरंतर और पूरी गति से जारी है। इस गंभीर परिस्थिति को संज्ञान में लेते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी असम के सांसदों के साथ उच्च स्तरीय चर्चा की है और केंद्र सरकार की ओर से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए राज्य सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने का आश्वासन दिया गया है।

इन बाढ़ों में सिर्फ राहत-बचाव-मुआवजा से कम नहीं चलने वाला है। इस बात पर विचार करने की जरुरत हैं कि आखिर यह जल-प्रलय इतनी तीव्र और विनाशकारी क्यों थी। यह मुख्य रूप से उच्च तीव्रता वाली लगातार बारिश का नतीजा थी,जहां छह सौ पचास मिलीमीटर तक की भारी जलवृष्टि दर्ज की गई। 19

जुलाई के आसपास जब पानी का स्तर अचानक तेजी से बढ़ना शुरू हुआ,तो शिवसागर,चराईदेव और जोरहाट जैसे जिले सबसे पहले इसकी भयानक चपेट में आ गए। इसके पीछे एक बड़ा कारण ऊपरी ब्रह्मपुत्र और उसकी प्रमुख सहायक नदियों में आया अप्रत्याशित उफान था। नागालैंड की नागा पहाड़ियों से निकलकर शिवसागर में मिलने वाली दिखौ नदी हो,या पटकाई बूम से निकलकर ब्रह्मपुत्र में समाहित होने वाली दिसांग नदी,और बराइल पहाड़ियों से बहकर आने वाली धनसिरी नदी,इन सभी ने अपने जलग्रहण क्षेत्रों में हुई मूसलाधार बारिश के कारण विकराल रूप धारण कर लिया। जब ये नदियाँ तेज बहाव युक्त पानी लेकर ब्रह्मपुत्र नदी में मिलने को पहुँची तो बह्मपुत्र का जलस्तर पहले ही काफी बढ़ा था। फिर क्या था इन्होने असम के मैदानी इलाकों को जलमग्न कर दिया,जिसके परिणामस्वरूप शुरुआती दौर में बारह जिलों के आठ सौ छप्पन गांवों के लगभग दो लाख लोग बुरी तरह प्रभावित हुए,पचास हजार से अधिक लोगों को राहत शिविरों में शरण लेनी पड़ी और 75 से अधिक लोगों को अपनी बहुमूल्य जान गंवानी पड़ी।

नदियां प्राकृतिक रूप से ही उग्र नहीं होतीं। इस विभीषिका के पीछे मानवीय हस्तक्षेप और हमारी व्यवस्थागत त्रुटियों की भूमिका बेहद चिंताजनक रही है। बाढ़ के इन मूल कारणों की गहराई में जाने पर हम पाते हैं कि अंधाधुंध अवैध खनन और वनों की अनियंत्रित कटाई ने इस समस्या को कई गुना अधिक भयंकर बना दिया है। जंगल और पेड़ प्राकृतिक रूप से वर्षा के पानी को सोखने और उसके तेज बहाव को धीमा करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं,लेकिन जिस निर्ममता से इन हरे आवरणों को नष्ट किया गया है,उसने पहाड़ों और मैदानी इलाकों की इस प्राकृतिक रक्षा ढाल को बेहद कमजोर कर दिया है। इसके समानांतर,नदियों के किनारों और उनके बेसिन क्षेत्रों में होने वाले बेतहाशा अवैध खनन से भारी मात्रा में मिट्टी का कटाव हुआ है। यह कटी हुई मिट्टी और गाद बहकर नदियों के तल में जमा हो गई है,जिससे नदियां लगातार उथली होती जा रही हैं। जब नदियों की गहराई और उनकी जल धारण क्षमता कम हो जाती है,तो थोड़ी सी भी अतिरिक्त बारिश होने पर पानी किनारों को तोड़कर आसपास की बस्तियों और खेतों में घुस जाता है। यह स्थिति इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं है, बल्कि हमारे पारिस्थितिक तंत्र के साथ किए गए निरंतर और अमानवीय खिलवाड़ का एक दुःखद परिणाम है।

जलभराव की इस विशाल त्रासदी ने कई ऐसी गंभीर चिंताओं को जन्म दिया है, जो केवल नदियों का पानी उतरने के साथ खत्म नहीं होने वाली हैं। सबसे बड़ी और तात्कालिक चुनौती प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँच की रही है,जिसके कारण कई दुर्गम स्थानों पर राहत कार्यों में अवांछित देरी का सामना करना पड़ा। जब संपर्क मार्ग,सड़कें और पुल पानी में डूब जाते हैं या टूट जाते हैं,तो अंतिम व्यक्ति तक मदद पहुंचाना प्रशासन के लिए एक बहुत बड़ी और जटिल परीक्षा बन जाती है। इसके अलावा,बाढ़ का पानी कम होने के बाद प्रभावित इलाकों में महामारियों और जलजनित बीमारियों के फैलने का खतरा काफी बढ़ जाता है, जिससे आम जनमानस के स्वास्थ्य की सुरक्षा एक प्रमुख चिंता बनकर उभरती है। प्रभावित परिवारों,विशेषकर बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की आशंका भी एक ऐसा संवेदनशील मुद्दा है जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है,क्योंकि लोगों की खेती और घरों में रखे खाद्य भंडार पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं। इन सभी जमीनी चुनौतियों के बीच, नीतिगत विफलताओं पर भी एक ईमानदार विमर्श आवश्यक हो जाता है कि आखिर दशकों से हर साल आने वाली इस आपदा के स्थायी समाधान के लिए हम एक सुदृढ़,वैज्ञानिक और दूरदर्शी नीति का निर्माण करने में क्यों पीछे रह जाते हैं।

इस समस्या से मुक्ति पाने और राज्य के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए अब हमें केवल तात्कालिक राहत उपायों से आगे बढ़कर दीर्घकालीन और ठोस कदम उठाने की नितांत आवश्यकता है। इसके लिए सबसे पहली और अनिवार्य शर्त वृहद रूप से वनीकरण अभियान चलाने की है। नदियों के नाजुक पारिस्थितिक तंत्र को बचाने के लिए हर प्रकार के अवैध खनन पर पूर्ण और अत्यंत सख्त रोक लगानी होगी। इसके साथ ही,नदियों के पुनरुद्धार की व्यापक और वैज्ञानिक योजनाएं बनानी होंगी, जिनमें उनकी गाद निकालने और उनके प्राकृतिक प्रवाह को अतिक्रमण से मुक्त करने पर विशेष जोर दिया जाए। नदी के ऊपरी क्षेत्रों में स्थापित विभिन्न जल-विद्युत परियोजनाओं और बांधों का समुचित प्रबंधन भी उतना ही महत्वपूर्ण है,ताकि मानसून के दौरान पानी छोड़े जाने की प्रक्रिया नियंत्रित हो और निचले इलाकों में अचानक बाढ़ का खतरा न मंडराए। हमें दीर्घकालीन शहरी नियोजन की दिशा में गंभीरता से विचार करना होगा,जहां बस्तियों,सड़कों और बुनियादी ढांचे का निर्माण नदियों के प्राकृतिक बाढ़ क्षेत्रों का सम्मान करते हुए किया जाए। इन सभी बहुआयामी और समग्र दृष्टिकोणों को अपनाकर ही हम असम को इस वार्षिक जल-त्रासदी के दुष्चक्र से बाहर निकाल सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित तथा आनंदमयी कल की मजबूत नींव रख सकते हैं।

राजनीतिः देश सेवा का संकल्प और आज की हकीकत

राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़ छत्तीसगढ़

राजनीति को किसी भी लोकतांत्रिक देश की आत्मा माना जाता है। अरस्तू से लेकर चाणक्य तक,सभी विचारकों ने राजनीति को समाज कल्याण और राष्ट्र निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम बताया है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में जब हम राजनीति शब्द का विश्लेषण करते हैं,तो इसका मूल अर्थ राज (शासन) और नीति (उचित व्यवहार या नियम) से जुड़ता है,जिसका अंतिम उद्देश्य लोक-कल्याण ही है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू,सरदार पटेल, सुभाष चंद्र बोस और डॉ. बी.आर. आंबेडकर जैसे महापुरुषों ने राजनीति को देश सेवा के संकल्प के रूप में अपनाया। परंतु,आजादी के आठ दशकों बाद आज की समकालीन राजनीति का चेहरा इस मूल संकल्प से काफी दूर, हकीकत के एक अलग धरातल पर खड़ा दिखाई देता है। देश सेवा का संकल्प-ऐतिहासिक पृष्ठभूमिभारत का स्वतंत्रता आंदोलन राजनीति और देश सेवा के अनूठे संगम का सबसे बड़ा उदाहरण है। उस दौर में राजनीति में कदम रखने का सीधा मतलब था–त्याग,तपस्या और जेल की सलाखें। नेताओं का एकमात्र संकल्प भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्त कराना और एक ऐसे समतामूलक समाज की स्थापना करना था,जहाँ हर नागरिक को न्याय,स्वतंत्रता और समानता मिल सके।संविधान सभा के गठन के समय भी यही संकल्प सर्वोपरि था। हमारे नीति-निर्माताओं ने एक ऐसा ढांचा तैयार किया जो अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति (अंत्योदय) के कल्याण को सुनिश्चित कर सके। उस समय राजनीति कोई पेशा या व्यवसाय नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना थी।

वर्तमान हकीकत

संकल्प से भटकावआज की राजनीति का अवलोकन करने पर संकल्प और हकीकत के बीच एक गहरी खाई नजर आती है। वर्तमान समय में राजनीति के मायने और काम करने के तरीके पूरी तरह बदल चुके हैं : सत्ता केंद्रित राजनीति : आज राजनीति का मुख्य उद्देश्य देश सेवा के बजाय किसी भी तरह सत्ता प्राप्ति बन गया है। नीतियां जनकल्याण को ध्यान में रखकर बनाने के बजाय वोट बैंक को सुरक्षित करने के लिए बनाई जाने लगी हैं। अपराधीकरण और धनबल चुनाव लड़ना आज बेहद खर्चीला हो चुका है। राजनीति में बाहुबल और धनबल का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है।

चातुर्मास अनुष्ठान : हर ब्रम्ह्चारी,गृहस्थ ओर सन्यासी का नित्यकर्म होना चाहिए !

आत्माराम यादव 'पीव',नर्मदापुरम,मध्यप्रदेश

भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेद-पुराण ओर शास्त्र है जिसके रहस्यमय ज्ञान को हम ओर हमारा समाज हृदयंगम नहीं कर सका है,परिणामस्वरूप वह विलुप्तप्राय होता जा रहा है ओर हम अर्थ ओर काम के मार्गगामी हो धर्म ओर मोक्ष की राह भूल गए है। धर्म ओर मोक्ष का मार्ग हमारे परमार्थ का मार्ग है जंहा शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से मुक्ति से परम शांति ओर कल्याण ही नही अपितु जन्म मरण का चक्र समाप्त हो परमात्मा का निज धाम प्राप्त होता है। श्रीवामनपुराण के सोलहवे अध्याय में चातुर्मास व्रत अनुष्ठान का वर्णन है जहा इस व्रत को सभी वर्ग,सभी वर्ण के हरेक व्यक्ति के लिए करने का उल्लेख है जिसवे व्रत के माध्यम से वे स्वस्थ शरीर के साथ ही मन,बुद्धि,चित्त और अहंकार आदि की परिशुद्धि सहज ही पा जाते है। कुछ लोग कहते हैं कि यह व्रत संन्यासियों के लिये ही है इसलिए सनातन धर्म के सभी साधु,सन्यासी,साधक ऋषि मुनि आदि सभी देवशयन के बाद देवउठनी तक की 4 मास की अवधि तक एक स्थान पर ठहर कर अपना अनुष्ठान पूरा करते है ,जबकि इस व्रत को ब्रह्मचारी,गृहस्थ,वानप्रस्थी और संन्यासी मिलकर या पृथक पृथक अनुष्ठान कर सकते है।

देवशयनी एकादशी का वह समय जब आषाढ़ी पूर्णिमा शुक्लपक्ष में सूर्य के मिथुनराशि में चले जाने पर एकादसी तिथि के दिन जगदीश्वर विष्णुजी शय्या पर जाते है तब सूर्य उत्तरायण होते है तब लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु भोगियोग (शेषशय्या) पर सो जाते हैं। उन विष्णु के सो जाने पर देवता, गंधर्व एवं देवमाताएँ भी क्रमशः सोते हैं-प्रतिसुप्ते विधी तस्मिन् देवगन्धर्वगुष्ठाकाः। देवानां मातरश्चापि प्रसुप्ताचाप्यनुक्रमात् ॥ इसके बाद त्रयोदशी तिथि में सुगन्धित कदम्ब के पुष्पों से बनी पवित्र शय्या पर कामदेव शयन करते हैं। फिर चतुर्दशी को सुशील स्वर्णपङ्कज से निर्मित सुखदायक रूप में बिछाये गये तकियेवाली शय्यापर यक्ष लोग शयन करते हैं। पूर्णमासी तिथि को चर्म वस्त्र धारण कर उमानाथ शंकर एक-दूसरे चर्मद्वारा जटाभार बाँधकर व्याघ्र चर्म की शय्यापर सोते हैं।

एक अजब जिंदगी,तवायफ़ की दास्ताँ महफिल और कोठा

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा,मध्यप्रदेश

दिन ढलते ही शहर की रौनक बदल जाती थी। एक तरफ़ इत्र की ख़ुशबू और दूसरी तरफ घुंघरूओं की झनकार। शाम ढलती और कोठे की सीढ़ियों पर रईसजादों की भीड़ जुटने लगती। तवायफ़ की दुनिया सिर्फ़ इतनी थी,लोगों का दिल बहलाना, उनके ग़म भुलाना और ख़ुद के आंसुओं को घुंघरूओं की आवाज़ में छिपा लेना।

दिन भर रियाज़,घुंघरूओं की ख़नक और महफिलों की सजावट। रात होते ही पान की पीकदान,शराब के दौर और हवा में तैरते हुए कश। महफिलें सजती थीं, लोग आते थे,वही लोग जो दिन के उजाले में खुद को समाज का शरीफ़ और पारसा (नेक) कहते थे,लेकिन रात की चादर तले इसी कोठे के ख़ामोश कमरों में अपने सारे उसूल बेच आते थे।

वे निगाहें जो दिन में तवायफ़ को देखकर नज़रें फेर लेती थीं,रात को उसके हुस्न पर पैसे उछालती थीं। उसके साथ हंसती थीं,उसके वजूद से खेलती थीं और शराब के प्यालों में डूबकर अपनी सारी इंसानियत भूल जाती थीं। सुबह होते ही वे अपने घरों को लौट जाते,साफ़-सुथरे, इज़्ज़तदार और बेदाग़ बनकर।

मगर बदनाम कौन होता था? सिर्फ़ कोठा और वह तवायफ़!

उस बेचारी का क़ुसूर क्या था? क्या वह खुद चलकर उन अमीरज़ादों को अपने दरवाज़े पर बुलाने जाती थी? नहीं! वे खुद अपनी ख्वाहिशों के गुलाम बनकर खिंचे चले आते थे। फिर भी गुनहगार हमेशा तवायफ़ ही ठहराई जाती, और समाज के वे तथाकथित पारसा अमीरज़ादे हमेशा पाक-साफ़ बने रहते। समाज की इस दोहरी नीति पर उस तवायफ़ की रूह रोज़ तड़पती थी।

एक रात,उस महफिल में एक ऐसा शख्स आया जो बाक़ी भीड़ से बिल्कुल जुदा था। उसकी आंखों में हवस नहीं, बल्कि एक अजीब सी उदासी और तहज़ीब थी। उसका नाम दानिश था–एक पढ़ा-लिखा,शर्मीला और सादगी पसंद इंसान,जो शहर के एक अदना से स्कूल में बच्चों को तालीम (शिक्षा) देता था।

दानिश उस महफिल में अपने एक दोस्त के जबरन खींच लाने पर आया था। उसने

बाक़ी लोगों की तरह न तो पैसे उछाले और न ही कोई भद्दी फ़रमाइश की। वह बस ख़ामोशी से बैठा तवायफ़ (जिसका नाम हुस्ना था) की घुंघरूओं की लय और उसकी दर्द भरी ग़ज़ल सुनता रहा। जब महफिल खत्म हुई और सब लोग जा चुके थे,दानिश जाने से पहले रुका। उसने हुस्न की आंखों में झांका और कांपते हुए लहजे में कहा...तुम्हारी इन घुंघरूओं की आवाज़ में कोई बहुत बड़ी सचाई छिपी है,लेकिन इस महफिल का शोर तुम्हारी रूह की चीख़ को दबा रहा है। तुम सिर्फ़ एक तमाशा नहीं हो,एक इंसान हो।

ये अल्फ़ाज़ हुस्ना के दिल पर तीर की तरह लगे। जिंदगी में पहली बार किसी मर्द ने उसे हुस्न की चीज़ या मनोरंजन का साधन नहीं,बल्कि एक इंसान समझा था। वक्त गुज़रता गया। दानिश रोज़ शाम को कोठे पर नहीं,बल्कि महफिल उठने के बाद सिर्फ़ एक घड़ी के लिए हुस्ना से मिलने आने लगा। धीरे-धीरे यह मुलाकातें मोहब्बत में बदल गईं। दानिश की मोहब्बत झूठी नहीं थी;वह जिस्म की नहीं,रूह की प्यासी थी। उसने हुस्ना के अतीत को देखे बिना,उसे उसकी बदनामी के दलदल से बाहर निकालने का फ़ैसला किया। लेकिन समाज इस सच्ची मोहब्बत को कैसे बर्दाश्त कर सकता था?

जब शहर के उन रईसजादों और तथाकथित शरीफ़ लोगों को यह पता चला कि एक आम शिक्षक एक तवायफ़ से बेइंतहा मोहब्बत कर बैठा है और उसे अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाना चाहता है, तो शहर में भूचाल आ गया।

कोठे पर आने वाले उन रईसजादों की इज़्ज़त दांव पर लग गई थी। उन्हें डर था कि अगर एक तवायफ़ को इज़्ज़त मिल गई,तो उनके पापों का पर्दाफ़ाश हो जाएगा।

एक सर्द रात, कोठे के बाहर कुछ रईसजादों ने दानिश को घेर लिया। उनके हाथों में नफ़रत और अहंकार की तलवारें थीं। उन्होंने दानिश को बेरहमी से पीटा। खून से लथपथ दानिश किसी तरह घिसटता हुआ कोठे की सीढ़ियों तक पहुँचा और हुस्ना के दरवाज़े पर दम तोड़ दिया। उसकी आखिरी सांसों में भी सिर्फ़ हुस्ना का नाम था और हाथ में वह किताब थी जिससे वह बच्चों को तालीम देता था।

जब हुस्ना ने दरवाज़ा खोला,तो सामने दानिश की लाश पड़ी थी। उस रात कोठे पर कोई घुंघरू नहीं बजा। उस रात किसी ने शराब का प्याला नहीं उठाया। हुस्ना ने दहाड़ मारकर रोना शुरू किया,वह रोना किसी तवायफ़ का नहीं, बल्कि एक लुट चुकी महबूबा का विलाप था।

लोग आज भी उस कोठे को याद करते हैं, जहां एक तवायफ़ ने नाचना गाना छोड़ दिया था और एक शिक्षक की सच्ची मोहब्बत ने उसे अमर कर दिया था।

अब वहशी महफिलों का वो बदनाम कोठा नहीं रहा था। समय की आंधी और एक सच्ची मोहब्बत के लहू ने उस इमारत का नक्शा ही बदल दिया था। अब वहाँ घुंघरूओं की ख़नक नहीं,बल्कि मासूम बच्चों की किलकारियाँ और 'इल्म की तालीम की गूंज सुनाई देती थी।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
सम्पादक

शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी और कंगना रनौत के विरोध में कांग्रेस का प्रदर्शन,घड़ी चौक पर फूंका पुतला

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

राष्ट्रीय नेतृत्व के आह्वान पर जिला महिला कांग्रेस एवं जिला कांग्रेस कमेटी सरगुजा ने बुधवार को घड़ी चौक पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी और भाजपा सांसद कंगना रनौत के विरोध में प्रदर्शन कर उनका पुतला दहन किया। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि गुजरात के चर्चित बिलकिस बानो प्रकरण में दोषियों की रिहाई के बाद उनके स्वागत से जुड़े विवाद के कारण प्रह्लाद जोशी को शिक्षा मंत्री बनाया जाना अनुचित है। वहीं,कांग्रेस ने भाजपा सांसद कंगना रनौत द्वारा छात्र आंदोलन से जुड़ी GEN-Z युवतियों पर की गई कथित टिप्पणी की भी कड़ी निंदा की। प्रदर्शन के दौरान जिला कांग्रेस कमेटी सरगुजा के अध्यक्ष बालकृष्ण पाठक ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में मर्यादित भाषा का प्रयोग होना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले वर्षों में राजनीतिक संवाद की भाषा लगातार असंयमित हुई है,जिसका प्रभाव अब सार्वजनिक विमर्श में दिखाई दे रहा है। सरगुजा जिला महिला कांग्रेस (शहर) की जिलाध्यक्ष सीमा सोनी ने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री को अपने अतीत से जुड़े विवादित प्रकरण पर सार्वजनिक रूप से स्पष्टीकरण एवं माफी मांगनी चाहिए।

उन्होंने भाजपा सांसद कंगना रनौत की टिप्पणी की आलोचना करते हुए कहा कि ऐसी भाषा जनप्रतिनिधियों के पद की गरिमा के अनुरूप नहीं है। प्रदर्शन में मधु दीक्षित, संध्या रवानी,गीता प्रजापति,मालती सिंह, जेनेबिब कुजूर,मेघा खांडेकर,रूही गजाला, गीता रजक, नुजहत फातिमा,चंचला सैंडिल, उर्मिला कुशवाहा, सरला राय, उर्मिला विश्वास, पूर्णम सिंह, शालिनी नंदा, ममता सिंह, रजनी महंत, साधना कश्यप, अनिता सिंह, कुलवंत कौर सोज, श्यामबाई, पिंकी निषाद, अंजुम, प्रतिमा सोनी, अनुराध सिंह, रेनी कुमार सहित जिला कांग्रेस कमेटी, महिला कांग्रेस एवं विभिन्न मोर्चा-प्रकोष्ठों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्कूलों में पुलिस की पाठशाला,छात्रों को यातायात नियम और नए कानूनों की दी जानकारी

बिना लाइसेंस वाहन चलाने पर होगी अभिभावकों की काउंसिलिंग,साइबर ठगी से बचाव के भी बताए उपाय

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

नाबालिगों की सुरक्षित यातायात व्यवस्था सुनिश्चित करने और सडक़ दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से सरगुजा पुलिस ने जिले के विभिन्न स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाया। इस दौरान छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों, नए आपराधिक कानूनों और साइबर अपराधों से बचाव की जानकारी दी गई। डीआईजी एवं एसएसपी राजेश अग्रवाल के निर्देशन में जिले के थाना एवं चौकी प्रभारियों ने हाई स्कूल दरिमा, हायर सेकेंडरी स्कूल रघुनाथपुर, सलका और सुंदरपुर मणिपुर में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। विद्यार्थियों को बिना लाइसेंस और बिना हेलमेट वाहन नहीं चलाने, सडक़ सुरक्षा नियमों का पालन करने तथा जिम्मेदार यातायात व्यवहार अपनाने की समझाइश दी गई। पुलिस ने बताया कि समझाइश के बाद भी यदि छात्र वाहन से स्कूल आते हैं तो उनके अभिभावकों को बुलाकर काउंसिलिंग की जाएगी। कार्यक्रम में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम की जानकारी दी गई। साथ ही पॉक्सो एक्ट, टोनही प्रताडऩा, नशे के दुष्परिणाम और साइबर अपराधों के प्रति भी विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। पुलिस ने ऑनलाइन ठगी से बचने,अंजान लोगों के साथ वित्तीय लेनदेन में सतर्क रहने और डिजिटल सुरक्षा अपनाने की सलाह दी। सरगुजा पुलिस ने कहा है कि यह जागरूकता अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा। साथ ही अभिभावकों से अपील की गई है कि वे अपने नाबालिग बच्चों को बिना लाइसेंस वाहन चलाने के लिए वाहन उपलब्ध न कराएं।

कांग्रेस ने सीतापुर ज्वेलर्स उठाईगिरी मामले में एसपी को लिखा पत्र

शीघ्र कार्रवाई और पीड़ित को राहत देने की मांग

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

सीतापुर स्थित काशी विश्वनाथ ज्वेलर्स में 26 जुलाई को दिनदहाड़े लगभग 1 करोड़ रुपये के आभूषणों की उठाईगिरी के मामले में जिला कांग्रेस कमेटी सरगुजा के अध्यक्ष बालकृष्ण पाठक ने पुलिस अधीक्षक सरगुजा को पत्र लिखकर आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी एवं पीड़ित व्यवसायी को तत्काल राहत प्रदान करने की मांग की है। पत्र के अनुसार,26 जुलाई की सुबह लगभग 11 बजे काशी विश्वनाथ ज्वेलर्स के संचालक अरुण देव सोनी अपनी दुकान का शटर खोल रहे थे। इसी दौरान चार अज्ञात बदमाशों ने कथित रूप से आभूषणों से भरे बैग को बड़ी सफाई से पार कर दिया। बताया गया है कि बैग में करीब 1 करोड़ रुपये मूल्य के गहने रखे हुए थे। इस घटना की जानकारी सरगुजा जिला पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के जिलाध्यक्ष ईश्वर सोनी ने जिला कांग्रेस अध्यक्ष बालकृष्ण पाठक को दी और मामले में हस्तक्षेप करने का आग्रह किया। इसके बाद कांग्रेस अध्यक्ष ने पुलिस अधीक्षक को पत्र भेजकर त्वरित कार्रवाई की मांग की। बालकृष्ण पाठक ने कहा कि जिले के आभूषण व्यवसायी पहले से ही चोरी और सुरक्षा संबंधी आशंकाओं के चलते प्रतिदिन अपने मूल्यवान आभूषण दुकान से घर और घर से दुकान लाने-ले जाने को मजबूर हैं। ऐसे में दिनदहाड़े इस प्रकार की उठाईगिरी की घटना ने व्यापारियों में भय और असुरक्षा की भावना को और बढ़ा दिया है। उन्होंने मांग की कि मामले के आरोपियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए,पीड़ित व्यवसायी को आवश्यक राहत प्रदान की जाए तथा व्यापारियों का पुलिस और शासन पर विश्वास बहाल करने के लिए ठोस एवं प्रभावी कार्रवाई की जाए। कांग्रेस का कहना है कि इस तरह की घटनाओं पर त्वरित कार्रवाई से ही व्यवसायियों में सुरक्षा का भरोसा कायम हो सकेगा।

व्यवसायी को केस वापस लेने की धमकी का आरोप : वासेपुर गैंगस्टर शब्बीर आलम समेत 9 पर एक और एफआईआर

मार्च में दी गई थी जान से मारने की धमकी,कोतवाली पुलिस ने दर्ज किया नया अपराध...फरार शब्बीर की मुश्किलें बढ़ीं

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

झारखंड के धनबाद स्थित वासेपुर के कुख्यात गैंगस्टर शब्बीर आलम की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही हैं। पहले 13 वर्षों तक अंबिकापुर में फरारी काटने और पुलिस कार्रवाई के दौरान फरार होने का मामला, फिर उसे संरक्षण देने वालों के खिलाफ एफआईआर और अब एक स्थानीय व्यवसायी को अदालत में लंबित मामला वापस लेने के लिए कथित रूप से धमकाने के आरोप में शब्बीर आलम, उसके बेटे कमरान आलम समेत नौ लोगों के खिलाफ कोतवाली थाना में एक और अपराध दर्ज किया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार खरसिया नाका निवासी व्यवसायी अबू मोहम्मद ने शिकायत दर्ज कराई है कि शब्बीर आलम, कमरान आलम, जिसान आलम, इरसाद आलम, दिलसाद आलम, सलमान, मोहम्मद साद,

खुशबास तथा नौसान ने 3-4 जनवरी और 17 मार्च 2026 को उसका पीछा किया, गाली-गलौज की तथा न्यायालय में विचाराधीन पुराने प्रकरण को वापस लेने का दबाव बनाया। शिकायतकर्ता का आरोप है कि मना करने पर आरोपियों ने उसे जान से मारने की धमकी दी, जिसके बाद से पूरा परिवार भय के माहौल में जीवन जी रहा है। कोतवाली पुलिस ने शिकायत के आधार पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की प्रासंगिक धाराओं के तहत अपराध पंजीबद्ध कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मामले में उपलब्ध साक्ष्यों और गवाहों के बयान के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पहले से फरार,अब बढ़ते जा रहे नए मुकदमे : शब्बीर आलम पहले ही झारखंड पुलिस के लिए लंबे समय से वांछित अपराधी है। उस पर वर्ष 2001 में धनबाद के चर्चित डबल मर्डर मामले में आरोपी होने का आरोप है। वर्ष 2013 में न्यायालय से फरार होने के बाद वह कथित रूप से अंबिकापुर में रह रहा था। वर्ष 2018 में उसे झारखंड हाईकोर्ट से आजीवन कारावास की सजा भी सुनाई जा चुकी है। इसके बावजूद वह वर्षों तक पुलिस की पकड़ से दूर रहा।

1 जुलाई की कार्रवाई के बाद खुलीं कई परतें : बीती 1 जुलाई को धनबाद पुलिस शब्बीर आलम को गिरफ्तार करने अंबिकापुर पहुंची थी। कार्रवाई के दौरान स्थानीय स्तर पर विरोध और अफरा-तफरी की स्थिति बन गई, जिसका फायदा उठाकर शब्बीर कथित रूप से फरार हो गया। इस घटना के बाद पुलिस ने उसे संरक्षण देने और फरार होने में सहयोग करने वालों के खिलाफ भी अलग से एफआईआर दर्ज की। इनमें परिवहन व्यवसाय से जुड़े कुछ लोगों के नाम भी सामने आए हैं और उनकी भूमिका की जांच जारी है।

जांच के दायरे में बढ़ रहा नेटवर्क

पुलिस सूत्रों का कहना है कि शब्बीर आलम के स्थानीय नेटवर्क,आर्थिक गतिविधियों और उसके सहयोगियों की भी गहन जांच की जा रही है। जांच एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि वर्षों तक फरार रहने के दौरान उसे किस-किस स्तर पर सहयोग मिला और उसके संपर्क किन लोगों से जुड़े रहे। पहले दर्ज मामलों और अब सामने आए नए आरोपों के बाद पुलिस की जांच का दायरा और विस्तृत हो गया है।

बढ़ रहे सवाल...

लगातार दर्ज हो रहे नए मामलों ने कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। यदि शिकायतकर्ता के आरोप जांच में सही पाए जाते हैं तो यह केवल एक व्यक्ति को धमकाने का मामला नहीं,बल्कि न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित करने के प्रयास के रूप में भी देखा जा सकता है। वहीं, यह भी सवाल उठ रहा है कि वर्षों तक फरार रहने वाले आरोपी का स्थानीय स्तर पर कितना प्रभाव और नेटवर्क सक्रिय रहा। इन सभी पहलुओं का अंतिम निष्कर्ष पुलिस जांच और न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही सामने आएगा।

पुलिस लाइन स्कूल में साइबर जागरूकता कार्यक्रम,छात्रों को ऑनलाइन ठगी से बचने के बताए उपाय

1930 हेल्पलाइन और साइबर पोर्टल पर शिकायत की प्रक्रिया समझाई, प्रश्नोत्तर सत्र में दूर की शंकाएं

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

साइबर अपराधों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने के उद्देश्य से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पुलिस लाइन अंबिकापुर में साइबर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डीआईजी एवं एसएसपी राजेश अग्रवाल के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम में साइबर वॉलंटियर्स एवं पुलिस मितान टीम ने छात्रों को ऑनलाइन ठगी से बचाव के व्यावहारिक उपाय बताए। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को ऑनलाइन फ्रॉड, ओटीपी किसी के साथ साझा नहीं करने, हनी ट्रैप, डिजिटल अरेस्ट, फर्जी निवेश योजनाओं, सोशल मीडिया धोखाधड़ी, साइबर बुलिंग, फिशिंग लिंक, फर्जी कॉल एवं मैसेज तथा बैंकिंग फ्रॉड से सतर्क रहने की जानकारी दी गई। साथ ही साइबर अपराध होने पर राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 और राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया भी समझाई गई। छात्राओं को आत्मरक्षा के लिए पेपर स्प्रे के सुरक्षित एवं आवश्यक उपयोग की जानकारी भी दी गई। कार्यक्रम को संवादात्मक बनाने के लिए प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने साइबर सुरक्षा से जुड़े सवाल पूछे। पुलिस टीम ने सरल उदाहरणों के माध्यम से उनकी शंकाओं का समाधान करते हुए सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में प्रभारी प्राचार्य विकास जोशी, विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं, कर्मचारी, साइबर वॉलंटियर्स और पुलिस मितान टीम के सदस्य उपस्थित रहे।

लखनपुर ब्लॉक के स्कूलों में शाला प्रवेश उत्सव एवं सरस्वती साइकिल वितरण

-संवाददाता-
लखनपुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

लखनपुर ब्लॉक के जमगवां कुन्नी एवं अरगोती हाई स्कूल में साला प्रवेश उत्सव एवं सरस्वती साइकिल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लूंड्रा क्षेत्र के विधायक प्रबोध मिंज, जिला पंचायत उपाध्यक्ष देवनारायण यादव, भाजपा मंडल अध्यक्ष रवि महंत, लाल साहू, पारस राजवाड़े, सूर्य बहादुर सिंह, तारावती, गणेश्वरी राठिया, सुदर्शन सिंह, राजा यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण जन उपस्थित रहे। इस अवसर पर विद्यार्थियों को सरस्वती योजना के तहत साइकिलें वितरित की गईं तथा नवप्रवेशित छात्रों का स्वागत किया गया।

अभिभावक की शिकायत पर शिक्षा विभाग हरकत में,डीईओ ने जांच का दिया आदेश

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

शहर के ग्राम सरगवां स्थित बिरला ओपन माइंड इंटरनेशनल स्कूल में अनुशासन बनाए रखने के लिए दी गई कथित सजा विवादों में आ गई है। स्कूल की एक शिक्षिका पर आरोप है कि उन्होंने कक्षा 8वीं के छात्र को हिंदी और अंग्रेजी में 100-100 बार मां की गाली लिखने का दंड दिया। छात्र के पिता ने इसे मानसिक प्रताडऩा बताते हुए जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से शिकायत की है। मामले को गंभीर मानते हुए शिक्षा विभाग ने जांच शुरू करा दी है। जानकारी के अनुसार 28 जुलाई को कक्षा 8वीं के दो छात्रों के बीच मारपीट और गाली-गलौज हुई थी। आरोप है कि

इसके बाद शिक्षिका प्रेरणा ने एक छात्र को दंड स्वरूप हिंदी और अंग्रेजी में 100-100 बार वही गाली लिखने के लिए कहा। इतना ही नहीं,छात्र को वह कॉपी अपने माता-पिता को दिखाकर उनके हस्ताक्षर कराकर लाने का भी निर्देश दिया गया। जब छात्र ने कॉपी घर पर दिखाई तो परिजन हैरान रह गए। छात्र के पिता ने जिला शिक्षा अधिकारी से शिकायत करते हुए कहा कि यदि बच्चे से गलती हुई थी तो उसे समझाना शिक्षक का दायित्व था,न कि उससे बार-बार गाली लिखवाना। उनका कहना है कि इस तरह की सजा से बच्चा गाली भूलने के बजाय उसे बार-बार दोहराने के लिए मजबूर हुआ। उन्होंने इसे शिक्षा के मूल उद्देश्य के विपरीत बताते हुए संबंधित शिक्षिका पर कार्रवाई की मांग की है। छात्र संगठनों ने भी मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग उठाई है।

जांच के बाद होगी कार्रवाई : जिला शिक्षा अधिकारी दिनेश झा ने बताया कि शिकायत उनके संज्ञान में आई है। मामले की जांच के लिए सहायक संचालक को स्कूल भेजा गया है। जांच रिपोर्ट मिलने के बाद तथ्यों के आधार पर उचित कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि यदि शिकायत सही पाई जाती है तो बच्चों को इस प्रकार की सजा देना स्वीकार्य नहीं है और संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

मार्गदर्शन एग्रीकल्चर कॉलेज के संस्थापक मानवेंद्र सिंह का निधन,शोक की लहर

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

शिक्षा जगत के लिए बुधवार का दिन बेहद दु:खद रहा। मार्गदर्शन संस्थान एवं मार्गदर्शन एग्रीकल्चर कॉलेज के संस्थापक मानवेंद्र सिंह का वाराणसी में हृदयाघात (हार्ट अटैक) से आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन का समाचार मिलते ही शिक्षा जगत,सामाजिक संगठनों और शहरवासियों में शोक की लहर दौड़ गई। मानवेंद्र सिंह ने अपने जीवन को शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित करते हुए हजारों विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके मार्गदर्शन और दूरदर्शी सोच से अनेक युवाओं को उच्च शिक्षा एवं रोजगार की दिशा मिली। उनके निधन को शिक्षा जगत के लिए अपूरणीय क्षति माना जा रहा है। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की शक्ति और संबल दें। उनका अंतिम संस्कार अम्बिकापुर के स्थानीय मुक्तिधाम शंकर घाट में पूरे श्रद्धा और सम्मान के साथ किया गया। अंतिम यात्रा एवं अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में मोहल्लेवासी, शहरवासी,शिक्षाविद,गणमान्य नागरिक,मित्र एवं शुभचिंतक उपस्थित रहे। सभी ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई देते हुए उनके व्यक्तित्व एवं शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

नाबालिगों की ड्राइविंग पर सरगुजा पुलिस सख्त,स्कूलों के बाहर शुरू हुई विशेष चेकिंग

बिना लाइसेंस वाहन चलाते मिलने पर अभिभावकों की होगी काउंसलिंग,अभियान लगातार रहेगा जारी

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

जिले में नाबालिगों द्वारा वाहन चलाने पर रोक लगाने के लिए सरगुजा पुलिस ने विशेष अभियान शुरू किया है। डीआईजी एवं एसएसपी राजेश अग्रवाल के निर्देशन में यातायात पुलिस और विभिन्न थाना-चौकी की टीमों ने बुधवार से स्कूलों एवं शिक्षण संस्थानों के आसपास सघन जांच और जागरूकता अभियान चलाया। अभियान के दौरान प्रमुख स्कूलों के बाहर विशेष चेकिंग पॉइंट लगाकर वाहन चला रहे छात्र-छात्राओं की जांच की गई। पुलिस ने उनसे ड्राइविंग लाइसेंस और हेलमेट के संबंध में जानकारी ली तथा बिना लाइसेंस और बिना हेलमेट वाहन नहीं चलाने की समझाइश दी। विद्यार्थियों को बताया गया कि ऐसा करने पर मोटर व्हीकल एक्ट के तहत कार्रवाई का प्रावधान है। पुलिस टीम ने विभिन्न शिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों से भी मुलाकात कर विद्यार्थियों को नियमित रूप से सडक़ सुरक्षा और यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने का आग्रह किया। साथ ही स्पष्ट किया गया कि यदि कोई नाबालिग वाहन चलाते हुए पाया जाता है तो उसके अभिभावकों को बुलाकर काउंसलिंग की जाएगी और कम उम्र में वाहन सौंपने के कानूनी परिणामों की जानकारी दी जाएगी। सरगुजा पुलिस ने अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने नाबालिग बच्चों को किसी भी परिस्थिति में वाहन चलाने के लिए न दें। पुलिस के अनुसार सडक़ सुरक्षा को लेकर यह अभियान आगामी दिनों में भी लगातार जारी रहेगा।

बाल साहित्य को मिला नया उपवन : आशा पाण्डेय की दो पुस्तकों का विमोचन,बच्चों में पढ़ने की रुचि बढ़ाने का संदेश

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

समग्र शिक्षा के अंतर्गत उल्लास साक्षरता अभियान के तत्वावधान में जन शिक्षण संस्थान,सरगुजा में मंगलवार को पुस्तक विमोचन एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साहित्यकार आशा उमेश पाण्डेय की बाल पत्रिका 'नन्हें उपवन' तथा सरगुजिहा भाषा की पुस्तक 'महमाई दाई अउ धानी सुरगुजा' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती वंदना और राज्य गीत के साथ हुआ। सरस्वती वंदना डॉ. पूनम दुबे मीणा ने प्रस्तुत की, जबकि राज्य गीत एवं मंच संचालन आशा उमेश पाण्डेय ने किया। पुस्तकों का विमोचन संयुक्त संचालक शिक्षा विभाग सरगुजा संजय कुमार गुप्ता, विकासखंड शिक्षा अधिकारी लखनपुर देव कुमार गुप्ता तथा पूर्व अपर कलेक्टर बिलासपुर श्याम सुंदर दुबे ने किया। इस अवसर पर संयुक्त संचालक संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि 'नन्हें उपवन' बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास के साथ-साथ उनमें पढ़ने की रुचि विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। वहीं देव कुमार गुप्ता ने कहा कि ऐसी बाल साहित्यिक कृतियां बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रभावी माध्यम हैं और इनके प्रकाशन का सिलसिला निरंतर जारी रहना चाहिए। पूर्व अपर कलेक्टर श्याम सुंदर दुबे ने इसे बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की दिशा में एक अभिनव पहल बताया। सहायक संचालक जिला कौशल विकास ललित पटेल ने कहा कि कविता और कहानियों के माध्यम से बच्चे सहज रूप से सीखते हैं। जिला परियोजना अधिकारी साक्षरता गिरीश गुप्ता ने इस प्रयास को प्रेरणादायी एवं सराहनीय बताया। लेखिका आशा उमेश पाण्डेय ने बताया कि उनकी दो पुस्तकों का एक साथ विमोचन हुआ है। उन्होंने कहा कि 'नन्हें उपवन' बच्चों के लिए प्रेरणादायी बाल पत्रिका है, जबकि 'महमाई दाई अउ धानी सुरगुजा' सरगुजिहा भाषा की उनकी दूसरी पुस्तक है, जिसका उद्देश्य स्थानीय भाषा, संस्कृति और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि सुनील दत्त मिश्रा ने बच्चों के बीच अपनी आगामी फिल्म 'भले दिनों की बात' का ट्रेलर एवं पोस्टर भी लॉन्च किया, जिसे उपस्थित लोगों ने सराहा। कार्यक्रम में अग्रणी बैंक प्रबंधक पूनम सिंह, उद्योग विभाग के प्रबंधक अंकुर गुप्ता, सहायक संचालक आदिवासी विकास किरण राजपूत,जन शिक्षण संस्थान के निदेशक एम. सिद्दीकी,वरिष्ठ साहित्यकार सपन सिन्हा, देवेन्द्र नाथ दुबे,सुरेश प्रसाद जायसवाल,डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय,पूनम दुबे मीणा, ओमप्रकाश दुबे,अनिल त्रिपाठी सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार, विद्यार्थी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

CMYK

तालाब निर्माण विवाद पर सियासत तेज,पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने खोला मोर्चा

पीसीसीएफ से फोन पर की चर्चा पूछा-जुलाई के भारी मानसून में आखिर किस नियम के तहत कराए गए तालाब निर्माण?

कोरिया जन सहयोग समिति की शिकायत के बाद अब राजनीतिक हस्तक्षेप,गुणवत्ता,जेसीबी,मस्टर रोल और सरकारी धन के उपयोग पर उठे नए सवाल

-संवाददाता-
बैकुंठपुर/सोनहत,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

कोरिया वन मंडल के सोनहत वन परिक्षेत्र में तालाब निर्माण कार्यों को लेकर उठे कथित अनियमितताओं के आरोप अब लगातार तूल पकड़ते जा रहे हैं,पहले स्थानीय ग्रामीणों ने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर सवाल उठाए, फिर दैनिक घटती-घटना ने क्रमवार खोजी समाचार प्रकाशित किए, इसके बाद कोरिया जन सहयोग समिति ने वनमंडलाधिकारी (डीएफओ) के नाम शिकायत और ज्ञापन सौंपकर उच्चस्तरीय जांच की मांग की। अब इस पूरे मामले में भरतपुर-सोनहत के पूर्व विधायक गुलाब कमरो भी खुलकर सामने आ गए हैं, उनके हस्तक्षेप के बाद यह मामला केवल विभागीय शिकायत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक और जनहित के मुद्दे के रूप में भी सामने आने लगा है, पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने प्रधान मुख्य वन संरक्षक (पीसीसीएफ), रायपुर से दूरभाष पर चर्चा कर पूरे प्रकरण की जानकारी दी और कथित अनियमितताओं की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की, उन्होंने कहा कि यदि आरोप सही हैं तो दोषियों के विरुद्ध विभागीय ही नहीं, बल्कि कानूनी कार्रवाई भी की जानी चाहिए।

पीसीसीएफ से पूछा...आखिर किस नियम के तहत हुआ निर्माण?

पूर्व विधायक ने बताया कि उन्होंने पीसीसीएफ से चर्चा के दौरान यह जानना चाहा कि क्या मानसून के दौरान इस प्रकार के निर्माण कार्यों की अनुमति किसी विशेष परिस्थिति में दी गई थी, अथवा यदि कार्य कराए गए तो उनके पीछे कौन-सी तकनीकी प्रक्रिया अपनाई गई, उन्होंने कहा कि यदि नियमों का पालन नहीं किया गया है, तो इसकी जवाबदेही तय होना आवश्यक है।

सोशल मीडिया पर साझा किए समाचार,उठाए तीखे सवाल...

पूर्व विधायक ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया मंच पर इस विषय से संबंधित समाचारों की कतरनें साझा करते हुए वन विभाग की कार्यप्रणाली पर कई प्रश्न उठाए,उन्होंने कहा कि यदि 15 जून के बाद सामान्यतः वर्षाकाल में मिट्टी से जुड़े निर्माण कार्य नहीं कराए जाते, तो फिर जुलाई माह में तालाब निर्माण किस नियम,किस प्रशासनिक अनुमति और किस तकनीकी स्वीकृति के आधार पर कराया गया? उन्होंने यह भी कहा कि यदि निर्माण कार्य पहली ही बारिश में क्षतिग्रस्त हो गए, तो यह निर्माण की गुणवत्ता,तकनीकी परीक्षण और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है।

तीन बड़े सवालों के जरिए घेरा वन विभाग पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने अपने बयान में तीन प्रमुख मुद्दे उठाए...

1. **मानसून में मिट्टी संबंधी निर्माण क्यों?**-उन्होंने कहा कि वर्षाकाल में मिट्टी आधारित निर्माण कार्यों की गुणवत्ता प्रभावित होने की संभावना रहती है,ऐसे समय में तालाब निर्माण कराना तकनीकी दृष्टि से भी प्रश्न खड़े करता है, यदि निर्माण कराया गया,तो उसके पीछे क्या तकनीकी औचित्य था,यह स्पष्ट होना चाहिए।
2. **क्या बजट खर्च करने की जल्दबाजी थी?**-उन्होंने पूछा कि जब क्षेत्र में लगातार बारिश हो रही थी,तब निर्माण कार्य कराने की आवश्यकता क्या थी? उन्होंने आशंका व्यक्त की कि कहीं वित्तीय वर्ष अथवा स्वीकृत राशि के व्यय की जल्दबाजी में तो कार्य नहीं कराया गया। हालांकि, इस आशंका की पुष्टि सक्षम जांच के बाद ही हो सकेगी।
3. **स्थानीय मजदूरों को रोजगार क्यों नहीं मिला?**- पूर्व विधायक ने यह भी आरोप लगाया कि कई स्थानों पर सूचना पटल नहीं लगाए गए और स्थानीय मजदूरों को रोजगार देने के बजाय जेसीबी एवं ट्रैक्टर जैसी मशीनों से कार्य कराया गया,उन्होंने कहा कि यदि ऐसा हुआ है,तो इसकी भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और यदि नियमों का उल्लंघन हुआ है तो जिम्मेदारों पर कार्रवाई होनी चाहिए।

जांच नहीं हुई तो आंदोलन की चेतावनी-पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने कहा कि यदि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच नहीं कराई गई और दोषियों पर कार्रवाई नहीं हुई, तो प्रभावित ग्रामीणों, युवाओं और स्थानीय नागरिकों के साथ व्यापक जनआंदोलन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकारी धन से संचालित योजनाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही अनिवार्य है तथा किसी भी प्रकार की अनियमितता स्वीकार नहीं की जा सकती।

चंदन चोरी से तालाब निर्माण तक बढ़ते सवाल- कोरिया वन मंडल पिछले कुछ समय से लगातार विवादों में रहा है, पहले सोनहत स्थित शासकीय नर्सरी से चंदन के पेड़ों की चोरी का मामला चर्चा में रहा, इसके बाद तालाब निर्माण कार्यों की गुणवत्ता, पहली बारिश में संरचनाओं के क्षतिग्रस्त होने और निर्माण प्रक्रिया को लेकर सवाल उठे। अब इन मामलों को लेकर सामाजिक संगठनों और जनप्रतिनिधियों की सक्रियता बढ़ने से विभाग पर निष्पक्ष जांच का दबाव भी बढ़ता दिखाई दे रहा है।

शिकायतों की श्रृंखला ने बढ़ाया दबाव

इस पूरे घटनाक्रम में पहले मीडिया के माध्यम से सवाल उठे, फिर कोरिया जन सहयोग समिति ने डीएफओ को ज्ञापन सौंपा, मुख्यमंत्री के नाम शिकायत भेजी और अब पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने पीसीसीएफ से चर्चा कर सार्वजनिक रूप से सवाल उठाए हैं, इससे यह स्पष्ट है कि यह मामला अब केवल स्थानीय स्तर का नहीं रह गया है।

अब निगाहें वन विभाग और शासन पर...

अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या वन विभाग इन आरोपों की निष्पक्ष तकनीकी एवं वित्तीय जांच कर वास्तविक स्थिति स्पष्ट करेगा, या फिर मामला केवल शिकायतों और आश्वासनों तक सीमित रह जाएगा, यदि जांच में शिकायतों में लगाए गए आरोप सही पाए जाते हैं,तो संबंधित अधिकारियों एवं अन्य जिम्मेदार व्यक्तियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की उम्मीद भी बढ़ेगी।

एमसीबी के पत्रकार सतीश गुप्ता राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित,दमोह में असाटी समाज के अखिल भारतीय समारोह में मिला सम्मान

11वें अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान समारोह में पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए किया गया सम्मानित

-संवाददाता-
मनेन्द्रगढ़/दमोह,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ के मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (एमसीबी) जिले के मनेन्द्रगढ़ निवासी वरिष्ठ पत्रकार सतीश गुप्ता को मध्यप्रदेश के दमोह में आयोजित 11वें अखिल भारतीय असाटी समाज प्रतिभा सम्मान समारोह-2026 में पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अखिल भारतीय असाटी महासभा द्वारा देशभर से आए समाजबंधुओं एवं गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में प्रदान किया गया। रानी दमयंती की पावन नगरी दमोह में आयोजित इस राष्ट्रीय स्तर के समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से समाज के पदाधिकारी,शिक्षाविद, पत्रकार,युवा,महिला प्रतिनिधि एवं प्रतिभाशाली छात्र-छात्राएं शामिल हुए। समारोह में शिक्षा, सामाजिक एकता, संस्कार और प्रतिभा सम्मान को केंद्र में रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया गया,पत्रकार सतीश गुप्ता को समाज और पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए स्मृति चिन्ह एवं सम्मान-पत्र प्रदान

कर सम्मानित किया गया,सम्मान प्राप्त करने पर उन्होंने इसे व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरे समाज,पत्रकारिता जगत और छत्तीसगढ़ की सम्मानजनक पहचान बताया।

छत्तीसगढ़ से पहुंचा प्रतिनिधिमंडल- समारोह में मनेन्द्रगढ़ से शिक्षा समिति के सह संयोजक मनीष गुप्ता,महिला समिति की अध्यक्ष प्रेमलता गुप्ता,अंजना गुप्ता एवं अनामिका गुप्ता भी शामिल हुईं,लकी ड्रॉ में विजेता बनने पर प्रेमलता गुप्ता को भी मंच से सम्मानित किया गया, जबकि मनीष गुप्ता को शिक्षा समिति के सह संयोजक के रूप में उनके योगदान के लिए स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय स्तर के आयोजन में जुटे देशभर के समाजबंधु- समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतीय असाटी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनय असाटी ने की, मुख्य अतिथि के रूप में पंकज असाटी (जीएम, एनएचएआई, नई दिल्ली) उपस्थित रहे, कार्यक्रम में मध्यप्रदेश शासन के आनंद विभाग के मंत्री लखन पटेल सहित अनेक विशिष्ट अतिथि,शिक्षाविद एवं समाजसेवी मौजूद रहे, वक्ताओं ने शिक्षा,संस्कार,सामाजिक एकता और युवा पीढ़ी को समाजहित में आगे बढ़ने का संदेश दिया। साथ ही प्रतिभाओं के सम्मान को समाज की प्रगति का आधार बताया।

शिक्षा और समाज सेवा को मिला सम्मान- कार्यक्रम में कक्षा 10 वीं एवं 12 वीं के मेधावी विद्यार्थियों, आईआईटी, नीट और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं,उत्कृष्ट शिक्षकों तथा समाज के पत्रकारों को सम्मानित किया गया,आयोजन का उद्देश्य समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना रहा, राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त इस सम्मान से मनेन्द्रगढ़ सहित पूरे एमसीबी जिले में हर्ष का माहौल है। समाज के लोगों, पत्रकार साथियों एवं शुभचिंतकों ने सतीश गुप्ता को इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं देते हुए इसे जिले के लिए गौरव का विषय बताया।

हॉस्टल छोड़ कलेक्टर से मिलने निकलीं छात्राएं,शिकायतों पर शिक्षा विभाग हरकत में

भोजन की गुणवत्ता और अधीक्षिका के व्यवहार से नाराज थीं छात्राएं,रास्ते में समझाइश देकर लौटाया गया...

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

मिशन स्कूल राय रघुनाथपुर के हाई स्कूल हॉस्टल की छात्राएं बुधवार को अपनी शिकायत लेकर कलेक्टर से मिलने पैदल अंबिकापुर के लिए निकल पड़ीं। करीब 15 किलोमीटर दूर जिला मुख्यालय तक पैदल मार्च की सूचना मिलते ही शिक्षा विभाग और स्कूल प्रबंधन सक्रिय हो गया। अधिकारियों ने रास्ते में छात्राओं से बातचीत कर उन्हें वापस स्कूल भेजा और उनकी शिकायतों की जांच का भरोसा दिलाया। छात्राओं का कहना है कि हॉस्टल में लंबे समय से कई समस्याएं बनी हुई हैं। उन्होंने अधीक्षिका के व्यवहार पर नाराजगी जताते हुए आरोप लगाया कि उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया जाता है। साथ ही भोजन की गुणवत्ता पर भी सवाल उठाए। छात्राओं का आरोप है कि दाल में कीड़े निकलते हैं और खाने की व्यवस्था संतोषजनक नहीं है। उन्होंने हॉस्टल अधीक्षिका को हटाकर नई वार्डन की नियुक्ति की मांग की। मामले की जानकारी मिलते ही जिला शिक्षा अधिकारी दिनेश झा और स्कूल प्रबंधन के अधिकारी मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने छात्राओं की समस्याएं सुनीं और उनकी शिकायतों के निराकरण का आश्वासन दिया।

इसके बाद छात्राएं वापस हॉस्टल लौट गईं। जिला शिक्षा अधिकारी दिनेश झा ने बताया कि मामला निजी स्कूल के हॉस्टल से संबंधित है। छात्राओं की शिकायतों की जांच कराई जाएगी और जो भी तथ्य सामने आएंगे, उसके अनुसार आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म,आरोपी गिरफ्तार

करीब एक वर्ष तक करता रहा शोषण, कोतवाली पुलिस ने कार्रवाई कर भेजा जेल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म करने के आरोप में कोतवाली पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी पर आरोप है कि उसने युवती को शादी का भरोसा दिलाकर लंबे समय तक उसका यौन शोषण किया। पुलिस ने आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार पीड़िता ने थाना बगीचा में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि गिरहुलडी थाना सीतापुर निवासी निलेश श्रीवास ने 15 अगस्त 2025 से 27 जुलाई 2026 के बीच शादी का झांसा देकर उसके साथ कई बार दुष्कर्म किया। शिकायत के आधार पर बगीचा थाने में शून्य पर अपराध दर्ज कर प्रकरण अग्रिम विवेचना के लिए कोतवाली अंबिकापुर भेजा गया। कोतवाली पुलिस ने बीएनएस की धारा 69 में मामला दर्ज कर जांच शुरू की। विवेचना के दौरान पीड़िता के बयान दर्ज किए गए और आरोपी की तलाश की गई। पुलिस ने आरोपी निलेश श्रीवास (20), निवासी ग्राम गिरहुलडी, थाना सीतापुर को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ में आरोपी ने घटना स्वीकार कर ली। पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत,दोस्तों से लौटते समय हुआ हादसा

-संवाददाता-
सीतापुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)

सीतापुर थाना क्षेत्र में मंगलवार रात अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल युवक ने मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर में उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस अज्ञात वाहन और उसके चालक की तलाश में जुट गई है। जानकारी के अनुसार ग्राम उलकिया निवासी संजीव पैकरा (23) पिता फीरन राम पैकरा मंगलवार रात अपने दोस्तों से मिलने ग्राम राधापुर गया था। रात करीब 9 बजे वह बाइक से घर लौट रहा था।

क्षेत्रीय पत्रकारिता का बढ़ा मान,एमसीबी के युवा पत्रकार रविकांत सिंह राजपूत दिल्ली में '40 अंडर 40' राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित भव्य समारोह में सौंपा प्रतिष्ठित मोमेंटो

-संवाददाता-
मनेंद्रगढ़,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

देश की राजधानी नई दिल्ली के लोधी रोड स्थित देश के प्रतिष्ठित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में मंगलवार को मीडिया जगत की तमाम दिग्गज हस्तियों का जमावड़ा लगा। मौका था समाचार 4 मीडिया 40 अंडर 40 राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह का। जहाँ देश के युवा और साहसिक पत्रकारों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया, इसी गरिमामय मंच पर मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के होनहार और साहसी पत्रकार रविकांत सिंह राजपूत को मीडिया जगत के इस प्रतिष्ठित सम्मान से नवाजा गया। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने उन्हें मोमेंटो सौंपकर सम्मानित किया।

कड़े मानकों पर खरे उतरे रविकांत,जूरी ने सराहा-इस राष्ट्रीय अवॉर्ड के लिए देशभर के प्रिंट, टीवी और डिजिटल मीडिया से सैकड़ों पत्रकारों ने आवेदन किया था,देश के शीर्ष संपादकों और वरिष्ठ मीडिया विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय जूरी ने कड़े मानकों और गहन मूल्यांकन के आधार पर अंतिम 40 युवाओं का चयन किया, रविकांत सिंह राजपूत ने अपनी निष्पक्ष, साहसिक और अटूट समर्पण वाली पत्रकारिता के बल पर इस प्रतिष्ठित सूची में अपनी जगह बनाई,रविकांत की यह उपलब्धि न केवल उनके व्यक्तिगत संघर्षों और प्रयासों का प्रमाण है, बल्कि दूरस्थ अंचलों की क्षेत्रीय पत्रकारिता को भी राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान दिलाती है।

यूनिसेफ से भी मिल चुका है सम्मान

रविकांत सिंह राजपूत की पहचान क्षेत्रीय स्तर पर जन सरोकार से जुड़ी खबरों को निडरता से उठाने वाले पत्रकार के रूप में होती है,यह पहला मौका नहीं है जब उनकी पत्रकारिता को सराहना मिली हो, इससे पहले भी उन्हें उत्कृष्ट बाल पत्रकारिता के लिए प्रतिष्ठित यूनिसेफ मीडिया फॉर चिल्ड्रन अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

दिग्गज संपादकों का जुटा मेला

पुरस्कार वितरण समारोह से पूर्व एक विशेष मीडिया कॉन्फ्रेंस का भी आयोजन किया गया। इसमें देश के जाने-माने वरिष्ठ संपादकों और मीडिया हस्तियों ने वर्तमान मीडिया परिदृश्य, उभरती चुनौतियों और समसामयिक विषयों पर अपने विचार साझा किए,कार्यक्रम में मौजूद सभी दिग्गजों ने क्षेत्रीय पत्रकारिता के महत्व पर जोर देते हुए रविकांत जैसे युवा पत्रकारों के प्रयासों की सराहना की। दूरस्थ अंचलों से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी धाक जमाना और जनसरोकार की पत्रकारिता को पहचान दिलाना ही आज के दौर की सबसे बड़ी जरूरत है।

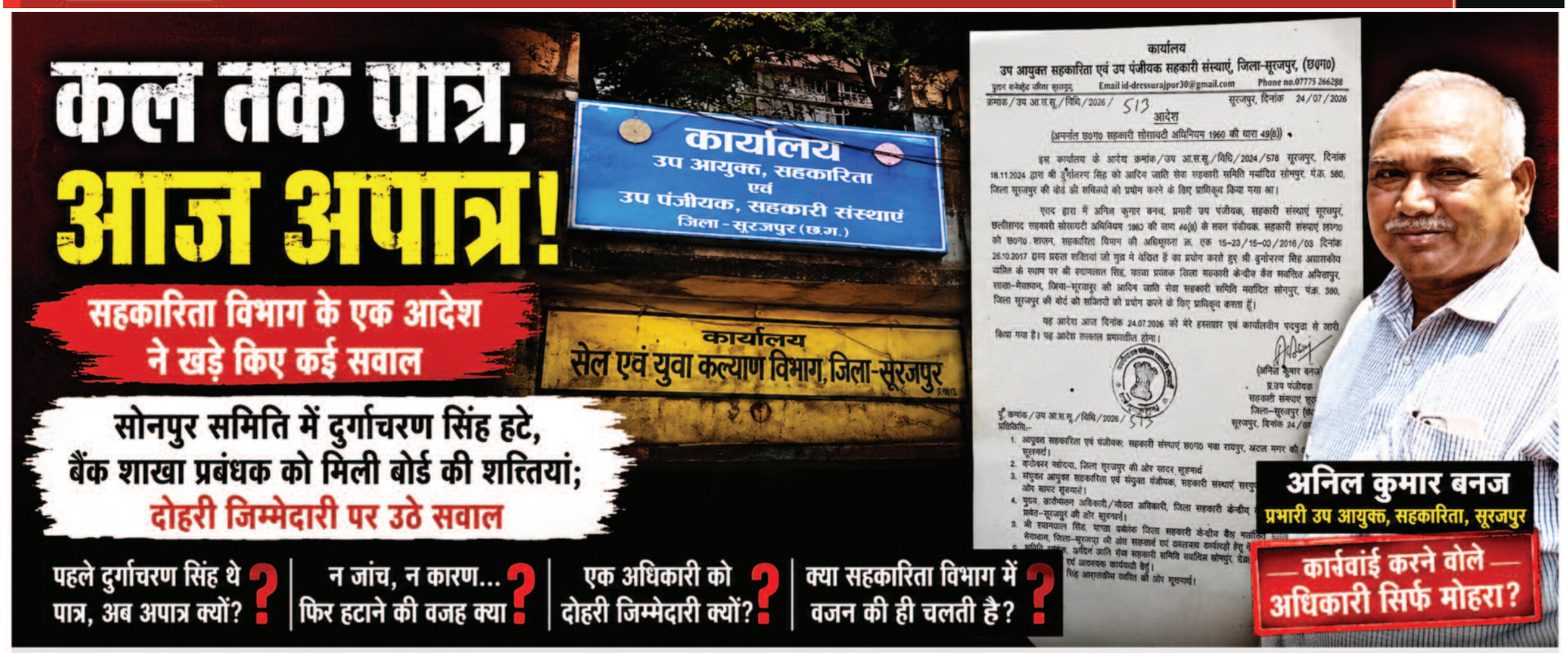

सहकारिता विभाग में 'वजन' की राजनीति? बोर्ड से हटे दुर्गाचरण सिंह...बैंक अधिकारी को मिली शक्तियां

सहकारिता विभाग में आखिर चल क्या रहा है? बोर्ड की शक्तियां बैंक शाखा प्रबंधक को सौंपने पर उठे सवाल

बोर्ड से हटे दुर्गाचरण सिंह, बैंक अधिकारी बने प्रशासक...आदेश पर उठे कई गंभीर सवाल

सहकारिता विभाग के फैसले पर सवाल, जो कल योग्य था, वह आज अयोग्य कैसे?

क्या सहकारिता विभाग में नियम नहीं, रिश्ते तय करते हैं पात्रता?

अध्यक्ष हटे, अफसर बैठे...सहकारिता विभाग के आदेश पर मचा बवाल

बोर्ड की कुर्सी से हटे दुर्गाचरण सिंह, शाखा प्रबंधक को मिला दोहरा प्रभार

सहकारिता विभाग में 'पात्र' से 'अपात्र' बनने की कहानी, आखिर जिम्मेदार कौन?

सोनपुर सेवा सहकारी समिति में दुर्गाचरण सिंह के स्थान पर बैंक शाखा प्रबंधक को बोर्ड की शक्तियां, सवाल– क्या कार्रवाई नियमों के तहत हुई या विभागीय खींचतान का परिणाम है?

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

सहकारिता विभाग हमेशा से किसानों,धान खरीदी,सहकारी समितियों और सरकारी योजनाओं के संचालन का सबसे महत्वपूर्ण विभाग माना जाता है,लेकिन विडंबना यह है कि यही विभाग समय-समय पर विवादों,शिकायतों और प्रशासनिक फैसलों को लेकर सबसे अधिक सवालों के घेरे में भी रहा है,धान खरीदी में गड़बड़ियां हों,बीमा भुगतान में अनियमितताओं के आरोप हों,समितियों के संचालन को लेकर विवाद हों या फिर बोर्ड के अधिकारों का इस्तेमाल–सहकारिता विभाग लगातार चर्चाओं में रहा है,अब सूरजपुर जिले की आदिम जाति सेवा सहकारी समिति मर्यादित सोनपुर से जुड़ा एक नया मामला सामने आया है,जिसने विभाग की कार्यप्रणाली पर कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

उप आयुक्त सहकारिता एवं उप पंजीयक सहकारी संस्थाएं,सूरजपुर द्वारा जारी आदेश के अनुसार दुर्गाचरण सिंह से बोर्ड की शक्तियां वापस लेकर जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित अंबिकापुर की भैयाथान शाखा के शाखा प्रबंधक श्यामलाल सिंह को बोर्ड की शक्तियों के प्रयोग के लिए अधिकृत कर दिया गया है,दस्तावेज तो केवल एक आदेश बताते हैं, लेकिन इस आदेश के पीछे कई ऐसे सवाल हैं जिनके जवाब शायद विभाग को देने होंगे, दैनिक घटती-घटना इस मामले में सहकारिता विभाग, संबंधित अधिकारियों एवं दुर्गाचरण सिंह का पक्ष भी प्रकाशित करेगा, ताकि पाठकों के सामने सभी पक्षों के साथ तथ्यात्मक और संतुलित तस्वीर प्रस्तुत की जा सके।

पहले योग्य...अब अयोग्य...आखिर क्यों?

उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार 18 नवंबर 2024 को जारी आदेश क्रमांक 578 के माध्यम से दुर्गाचरण सिंह को आदिम जाति सेवा सहकारी समिति सोनपुर के बोर्ड की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए अधिकृत किया गया था,यानी उस समय विभाग की नजर में वे पूरी तरह योग्य थे,अब 24 जुलाई 2026 को जारी आदेश क्रमांक 513 में उन्हीं दुर्गाचरण सिंह के स्थान पर श्यामलाल सिंह को अधिकृत कर दिया गया,सबसे बड़ा प्रश्न यही है की यदि दुर्गाचरण सिंह योग्य नहीं थे तो उन्हें 2024 में यह जिम्मेदारी क्यों दी गई? और यदि वे योग्य थे तो आखिर ऐसा क्या हुआ कि दो वर्ष के भीतर उन्हें हटाने की आवश्यकता पड़ गई? क्या उनके खिलाफ कोई जांच हुई? क्या उन्हें कारण बताओ नोटिस दिया गया? क्या उनका पक्ष सुना गया? क्या किसी सक्षम जांच में उन्हें दोषी पाया गया? आदेश में इन प्रश्नों का कोई उल्लेख नहीं है।

क्या सहकारिता विभाग में पात्रता परिस्थितियों के अनुसार बदलती है?

सहकारिता विभाग को लेकर लंबे समय से एक चर्चा आम है,जब तक समिति का पदाधिकारी अधिकारियों के साथ सामंजस्य बनाकर चलता है, तब तक वह योग्य माना जाता है, लेकिन जैसे ही मतभेद सामने आते हैं, शिकायतें शुरू हो जाती हैं, इसके बाद जांच, कार्रवाई और अधिकार वापस लेने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है,यदि ऐसा नहीं है तो विभाग को पारदर्शिता के साथ यह बताना चाहिए कि इस मामले में कार्रवाई किन तथ्यों के आधार पर की गई।

एक अधिकारी... दो बड़ी जिम्मेदारियां-

नए आदेश के अनुसार अब श्यामलाल सिंह अपनी बैंक शाखा के नियमित कार्यों के साथ-साथ समिति के बोर्ड की शक्तियों का भी प्रयोग करेंगे,यानी वे बैंक संचालन भी देखेंगे, समिति के बोर्ड से जुड़े निर्णय भी लेंगे,ऐसे में प्रशासनिक विशेषज्ञों के बीच यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या एक अधिकारी पर दोहरी जिम्मेदारी डालना व्यावहारिक है? क्या इससे दोनों संस्थाओं के काम प्रभावित नहीं होंगे? क्या हितों के टकराव जैसी स्थिति उत्पन्न होने की संभावना नहीं बनेगी?

क्या नियमों के तहत हुई कार्रवाई?

दस्तावेज के अनुसार यह आदेश छत्तीसगढ़ सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 की धारा 49(8) के अंतर्गत जारी किया गया है, कानून विभाग को यह अधिकार अवश्य देता है कि विशेष परिस्थितियों में बोर्ड की शक्तियों के प्रयोग के लिए किसी व्यक्ति या अधिकारी को अधिकृत किया जा सके,लेकिन ऐसे मामलों में यह अपेक्षा भी रहती है कि कार्रवाई के कारण स्पष्ट हों और पूरी प्रक्रिया पारदर्शी दिखाई दे।

क्या बोर्ड की शक्तियां केवल प्रशासनिक औपचारिकता हैं?

सहकारी समिति के बोर्ड की भूमिका केवल बैठकों तक सीमित नहीं होती, बोर्ड धान खरीदी से जुड़े निर्णय लेता है,समितियों के प्रशासनिक निर्णय करता है, वित्तीय मामलों पर निर्णय लेता है,किसानों से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर अधिकार रखता है,ऐसे में यदि बोर्ड की शक्तियां किसी अधिकारी को दी जाती हैं तो वह केवल अतिरिक्त प्रभार नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्व होता है।

सहकारिता विभाग पहले भी रहा है विवादों में...

सूरजपुर सहित प्रदेश के विभिन्न जिलों में सहकारिता विभाग पहले भी कई मामलों को लेकर चर्चा में रहा है,धान खरीदी में गड़बड़ी के आरोप,बीमा भुगतान में अनियमितताओं की शिकायतें,समितियों के संचालन पर विवाद,प्रशासकों की नियुक्ति को लेकर सवाल, बोर्ड की शक्तियों के उपयोग पर विवाद,ऐसे मामलों में समय-समय पर जांच भी होती रही है,इसी कारण सोनपुर समिति का यह नया आदेश भी चर्चा का विषय बन गया है।

क्या यह केवल प्रशासनिक निर्णय है या विभागीय खींचतान?

सोनपुर समिति में हुए इस बदलाव के बाद सहकारिता विभाग के भीतर भी कई तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं,कुछ लोग इसे सामान्य प्रशासनिक निर्णय मान रहे हैं,वहीं कुछ लोगों का कहना है कि यह विभाग के अंदर चल रही खींचतान का परिणाम हो सकता है, हालांकि इन चर्चाओं की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है,ऐसे में वास्तविक स्थिति स्पष्ट करना विभाग की जिम्मेदारी बनती है।

अब विभाग के जवाब का इंतजार

सोनपुर समिति का यह मामला केवल एक अधिकारी के हटने या दूसरे अधिकारी के अधिकृत होने तक सीमित नहीं है, असल सवाल यह है कि पात्रता का निर्धारण किन आधारों पर होता है? यदि कोई अपात्र था तो उसे पहले जिम्मेदारी क्यों दी गई? यदि कोई पात्र था तो उसे हटाने के पीछे क्या कारण हैं? क्या पूरी प्रक्रिया नियमों के अनुरूप और पारदर्शी रही? इन सवालों के जवाब आने के बाद ही पूरे मामले की वास्तविक तस्वीर सामने आ सकेगी।

15 करोड़ से अधिक हस्ताक्षरों के साथ गो सम्मान अभियान ने केंद्र सरकार को भेजा ज्ञापन

सूरजपुर से 1.83 लाख नागरिकों का समर्थन, गोहत्या-निषेध कानून, राष्ट्रमाता का सम्मान और केंद्रीय गो मंत्रालय गठन सहित 30 से अधिक मांगें उठाईं

-संवाददाता-
सूरजपुर,29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

गो सम्मान आह्वान अभियान के द्वितीय चरण के अंतर्गत सोमवार को सूरजपुर सहित देशभर के सभी जिलों में गो संरक्षण और गो सम्मान से जुड़ी विभिन्न मांगों को लेकर राष्ट्रपति,प्रधानमंत्री, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया, अभियान के तहत देशभर से 15 करोड़ से अधिक नागरिकों के हस्ताक्षरों के साथ प्रार्थना-पत्र सरकार को भेजे गए। अभियान के आयोजकों ने इसे जनभागीदारी का एक बड़ा प्रयास बताया, सूरजपुर जिले की ओर से 1,83,578 नागरिकों के हस्ताक्षरों का संकलित डाटा 7,215 पृष्ठों तथा एक पेनड्राइव के माध्यम से कलेक्टर को सौंपा गया, जिसे भारत सरकार को प्रेषित किया गया।

पूजन, मंत्रोच्चार और प्रार्थना यात्रा से हुई शुरुआत–कार्यक्रम का शुभारंभ गोमाता के पूजन, शंखनाद एवं 'श्री राम जय राम जय जय राम' विजय मंत्र के सामूहिक जप के साथ किया गया, इसके बाद गोभक्तों ने झंडे,बैनर,प्लेकार्ड और भजन-कीर्तन के साथ रंगमंच मैदान से कलेक्ट्रेट तक शांतिपूर्ण प्रार्थना यात्रा निकाली, यात्रा के दौरान भगवान श्रीकृष्ण,बलराम एवं गोमाता की आकर्षक झांकियां श्रद्धालुओं और आमजन के आकर्षण का केंद्र रहीं,बड़ी संख्या में महिलाओं,युवाओं, किसानों, व्यापारियों और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया।

30 से अधिक मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन–कलेक्ट्रेट पहुंचने पर संत-महात्माओं, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों तथा गणमान्य नागरिकों के प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री,राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा,ज्ञापन में प्रमुख रूप से देशभर में गोहत्या-निषेध के लिए केंद्रीय कानून बनाने,गोमाता को राष्ट्रमाता का सम्मान प्रदान करने, केंद्रीय गो मंत्रालय की स्थापना,गोचर भूमि को अतिक्रमणमुक्त कराने सहित 30 से अधिक मांगों पर शीघ्र निर्णय लेने का आग्रह किया गया।

गोमाता को बताया भारतीय संस्कृति और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार–अभियान के प्रतिनिधियों ने कहा कि गोमाता भारतीय संस्कृति, कृषि,पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती,ग्राम्य अर्थव्यवस्था और जनकल्याण का महत्वपूर्ण आधार रही है, उनका कहना था कि गो संरक्षण केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं,बल्कि कृषि,पर्यावरण और ग्रामीण विकास से भी जुड़ा हुआ मुद्दा है।

पहले चरण के बाद दूसरा चरण– अभियान से जुड़े पदाधिकारियों ने बताया कि प्रथम चरण के अंतर्गत 27 अप्रैल 2026 को देशभर की लगभग 5,000 तहसीलों के माध्यम से 5 करोड़ से अधिक नागरिकों के हस्ताक्षरयुक्त प्रार्थना-पत्र सरकार को सौंपे गए थे। अपेक्षित निर्णय नहीं होने के बाद अब दूसरे चरण में जिलास्तर पर पुनः अभियान चलाकर 15 करोड़ से अधिक हस्ताक्षरों के साथ अनुस्मारक ज्ञापन भेजा गया है।

एमसीबी जिले की कृषि विकास को मिलेगी नई दिशा, पहली बार तैयार हुआ स्वतंत्र

आत्मा योजना के तहत तैयार रणनीतिक अनुसंधान एवं कृषि विस्तार योजना का रायपुर में हुआ तकनीकी परीक्षण, विशेषज्ञों के समक्ष जिले की कृषि संभावनाओं का किया गया प्रस्तुतीकरण

-संवाददाता-
मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, 29 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

नवगठित जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (एमसीबी) की कृषि विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि जुड़ गई है,कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजना के अंतर्गत जिले का पहला स्वतंत्र स्ट्रेटेजिक रिसर्च एंड एक्सटेंशन प्लान तैयार किया गया है, यह योजना जिले की कृषि, उद्यानिकी,पशुपालन एवं मत्स्य पालन की वास्तविक आवश्यकताओं और संभावनाओं के आधार पर बनाई गई है, जिससे भविष्य में कृषि विस्तार कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप संचालित किया जा सकेगा, अब तक एमसीबी जिले का एसआरईपी,मातृ जिला कोरिया के माध्यम से संचालित होता था। लेकिन जिले के गठन के बाद स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों, प्राकृतिक संसाधनों,कृषि पद्धतियों, किसानों की समस्याओं तथा विकास की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए पहली बार जिले के लिए अलग और स्वतंत्र कार्ययोजना तैयार की गई है।

रायपुर में विशेषज्ञों के सामने हुआ तकनीकी परीक्षण–जिले द्वारा तैयार एसआरईपी का वेटिंग एवं पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण 28 से 30 जुलाई 2026 तक ईईआई आनंद एवं कृषि संचालनालय, रायपुर में आयोजित किया जा रहा है,इस दौरान कृषि विशेषज्ञों द्वारा रिपोर्ट का तकनीकी परीक्षण किया जा रहा है तथा आवश्यक सुझाव भी दिए जा रहे हैं, ताकि अंतिम रूप दिए जाने के बाद यह जिले की कृषि विकास की आधारभूत कार्ययोजना बन सके।

महेश पैकरा और दीपक साहू के नेतृत्व में पहुंची टीम

इस महत्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर की टीम सहायक मृदा संरक्षण अधिकारी महेश पैकरा एवं कृषि विस्तार अधिकारी दीपक कुमार साहू के नेतृत्व में रायपुर पहुंची। टीम में कृषि विभाग के साथ-साथ उद्यानिकी विभाग,पशुधन विकास विभाग एवं मत्स्य विभाग के अधिकारी और कर्मचारी भी शामिल रहे,सभी विभागों ने अपने-अपने विषयों से संबंधित योजनाओं एवं विकास की संभावनाओं का संयुक्त रूप से प्रस्तुतीकरण किया।

किसानों से सीधे संवाद के आधार पर तैयार हुई योजना

एसआरईपी तैयार करने के लिए जिले के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों में पार्टिसिपेटरी रूरल एप्रेजल गतिविधियां संचालित की गईं। इसके माध्यम से किसानों, ग्रामीणों तथा संबंधित हितधारकों से सीधे संवाद कर जानकारी एकत्र की गई,इस अध्ययन में फसल प्रणाली, सिंचाई संसाधन, भूमि की स्थिति,उद्यानिकी,पशुपालन,मत्स्य पालन,कृषि संबंधी चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण शामिल किया गया है।

कृषि योजनाओं का बनेगा रोडमैप

अधिकारियों के अनुसार आत्मा योजना के अंतर्गत तैयार यह एसआरईपी आने वाले वर्षों में जिले की आवश्यकता आधारित कृषि विस्तार योजनाओं का आधार बनेगा,इसके माध्यम से किसानों तक आधुनिक तकनीकों का प्रभावी हस्तांतरण, कृषि उत्पादकता में वृद्धि, कृषि लागत में कमी,आय में बढ़ोतरी तथा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास को गति मिलने की उम्मीद है,जिले के लिए तैयार यह स्वतंत्र रणनीतिक अनुसंधान एवं कृषि विस्तार योजना न केवल कृषि विभाग के लिए नीति निर्माण का आधार बनेगी,बल्कि विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर समेकित कृषि विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इससे स्थानीय संसाधनों के बेहतर उपयोग के साथ किसानों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप योजनाओं का लाभ दिलाने में सहायता मिलेगी।

बाघ की खाल और पैंगोलिन के शल्क के साथ तीन गिरफ्तार

WCCB भोपाल और सूरजपुर वन विभाग की संयुक्त कार्रवाई, वन्यजीव तस्करी नेटवर्क की जांच तेज

- आरोपियों के कब्जे से बाघ की खाल (मांस सहित) एवं पैंगोलिन के शल्क जब्त
- ओड़गी-भैयाथान मार्ग में घेराबंदी कर पकड़े गए तीन संदिग्ध
- सूरजपुर जिले के निवासी हैं तीनों आरोपी
- वन अपराध प्रकरण दर्ज, नेटवर्क की जांच जारी

खुफिया सूचना पर ओड़गी-भैयाथान मार्ग में घेराबंदी कर दबोचे गए आरोपी

वन अपराध प्रकरण दर्ज, अन्य आरोपियों की तलाश और पूरे नेटवर्क की जांच शुरू

-संवाददाता-
सूरजपुर,29 जुलाई 2026
(घटती-घटना)।

वन्यजीव तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत सूरजपुर वनमंडल को एक बड़ी सफलता मिली है,वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो सेंट्रल रीजन भोपाल और सूरजपुर वन विभाग की संयुक्त टीम ने बाघ की खाल एवं पैंगोलिन (सल्लू सांप) के शल्क (स्केल) की अवैध तस्करी के मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया है,आरोपियों के कब्जे से बाघ की खाल (मांस सहित),पैंगोलिन के शल्क तथा घटना में प्रयुक्त एक मोटरसाइकिल भी जब्त की गई है, मामले में वन अपराध दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी गई है। वन विभाग को आशंका है कि इस तस्करी के पीछे एक संगठित नेटवर्क सक्रिय हो सकता है।

संदेह के आधार पर रोका,तलाशी में मिला बाघ का अवशेष-घेराबंदी के दौरान भैयाथान की ओर से आ रहे तीन व्यक्तियों को रोककर पूछताछ की गई,प्रारंभिक पूछताछ में उनके जवाब और हावभाव संदिग्ध पाए गए। इसके बाद वन अधिकारियों ने उनके सामान की तलाशी ली,तलाशी के दौरान आरोपियों के पास से बाघ की खाल (मांस सहित) तथा वन्यजीव पैंगोलिन (सल्लू सांप) के शल्क (स्केल) बरामद हुए, बरामदगी के बाद तीनों को मौके पर ही हिरासत में लेकर विस्तृत पूछताछ की गई।

भोपाल से मिली खुफिया सूचना,तत्काल गठित हुई संयुक्त टीम

वन विभाग द्वारा जारी आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार 27 जुलाई 2026 को वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो सेंट्रल रीजन भोपाल से सूरजपुर वनमंडल को सूचना प्राप्त हुई थी कि वनमंडल क्षेत्र में बाघ की खाल एवं अन्य वन्यजीव अवशेषों की अवैध तस्करी की जा सकती है, सूचना मिलते ही वनमंडलाधिकारी सूरजपुर ने वन विभाग के अधिकारियों और वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो भोपाल के अधिकारियों की संयुक्त टीम गठित कर तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए, टीम में वन विभाग के अधिकारियों के साथ वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो के विशेषज्ञ अधिकारी भी शामिल रहे।

दो टीमों ने अलग-अलग क्षेत्रों में शुरू किया सर्च ऑपरेशन

सूचना के आधार पर संयुक्त टीम को दो हिस्सों में बांटा गया,एक टीम ने वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो अधिकारियों के साथ मिलकर संदिग्ध स्थानों पर निगरानी शुरू की, जबकि दूसरी टीम को सूरजपुर एवं कुदरगढ़ वन क्षेत्र में सक्रिय किया गया, खुफिया सूचना के अनुसार संदिग्धों की गतिविधियों पर नजर रखी गई और उनके संभावित मार्ग की पहचान की गई,इसके बाद ओड़गी-भैयाथान मार्ग पर ग्राम बैजनाथपुर के पास धरसेड़ी रोड में रणनीतिक घेराबंदी की गई।

तीनों आरोपी सूरजपुर जिले के निवासी-वन विभाग के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों की पहचान इस प्रकार हुई है, टिकेश्वर प्रसाद राजवाड़े (38 वर्ष) निवासी धरसेड़ी (नावापारा), थाना ओड़गी, जिला सूरजपुर, भुवनलाल (56 वर्ष) निवासी चंदरखोह (आमापानी), थाना ओड़गी, जिला सूरजपुर, राजेबलाल (58 वर्ष) निवासी चंदरखोह (आमापानी), थाना ओड़गी, जिला सूरजपुर, प्रारंभिक जांच में तीनों से वन्यजीव अवशेषों के स्रोत और संभावित खरीदारों के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

वन अपराध प्रकरण दर्ज

वन विभाग ने आरोपियों के विरुद्ध वन अपराध प्रकरण क्रमांक 809/24 दिनांक 28 जुलाई 2026 को दर्ज किया है, अब बरामद सामग्री की वैज्ञानिक जांच एवं फोरेंसिक परीक्षण सहित अन्य कानूनी प्रक्रियाएं पूरी की जाएंगी।

अन्य आरोपियों की भी तलाश

वन विभाग ने संकेत दिए हैं कि इस मामले में केवल तीन लोगों की गिरफ्तारी पर जांच समाप्त नहीं होगी, अधिकारियों का मानना है कि वन्यजीवों की तस्करी संगठित गिरोहों द्वारा की जाती है, जिनमें शिकार करने वाले, अवैध परिवहन करने वाले और खरीद-बिक्री करने वाले कई लोग शामिल हो सकते हैं, इसी कारण पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है और अन्य संभावित आरोपियों की भूमिका भी खंगाली जा रही है।

मोटरसाइकिल भी जब्त- कार्रवाई के दौरान आरोपियों के कब्जे से होंडा शाइन मोटरसाइकिल (पंजीयन क्रमांक CG-15 DN-7494) भी जब्त की गई। वन विभाग ने मौके पर पंचनामा तैयार कर वन्यजीव अवशेषों को विधिवत सीलबंद किया और सुरक्षित अभिरक्षा में रखा।

बाघ और पैंगोलिन दोनों संरक्षित वन्यजीव- बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम,1972 के अंतर्गत सर्वोच्च श्रेणी के संरक्षित वन्यजीवों में शामिल है, वहीं पैंगोलिन (सल्लू सांप) भी अत्यंत दुर्लभ एवं संरक्षित प्रजाति है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके शल्कों की अवैध मांग के कारण इसकी तस्करी लंबे समय से वन्यजीव अपराध का गंभीर विषय बनी हुई है,वन्यजीव विशेषज्ञों के अनुसार बाघ की खाल और पैंगोलिन के शल्कों की अंतरराष्ट्रीय काला बाजार में भारी मांग रहती है, जिसके चलते संगठित गिरोह लगातार इनकी तस्करी का प्रयास करते हैं।

वन विभाग ने लोगों से मांगा सहयोग

वन विभाग ने आम नागरिकों से अपील की है कि यदि कहीं वन्यजीवों के शिकार,उनके अंगों की खरीद-बिक्री या तस्करी जैसी गतिविधियों की जानकारी मिले तो तत्काल वन विभाग या संबंधित एजेंसियों को सूचना दें। विभाग का कहना है कि वन्यजीव संरक्षण केवल सरकारी एजेंसियों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज की भी साझा जिम्मेदारी है।

जांच अभी जारी...

वन विभाग के अनुसार प्रकरण की विवेचना जारी है, आरोपियों से पूछताछ के आधार पर तस्करी से जुड़े अन्य व्यक्तियों की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है, यदि जांच में किसी और की संलिप्तता सामने आती है तो उसके विरुद्ध भी नियमानुसार कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

चांदनी बिहारपुर को मिली नई एम्बुलेंस,28 ग्राम पंचायतों के 39 हजार से अधिक लोगों को मिलेगा लाभ

महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से दिखाई हरी झंडी, कहा-ग्रामीणों तक समय पर स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता

-संवाददाता-
सूरजपुर,29 जुलाई 2026
(घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के दूरस्थ चांदनी बिहारपुर क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र,चांदनी बिहारपुर से नई एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, लगभग 18 लाख रुपये की लागत से उपलब्ध कराई गई यह एम्बुलेंस अब क्षेत्र के लोगों को आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी,मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता है कि दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी समय पर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हों, उन्होंने कहा कि किसी भी गंभीर बीमारी, सड़क दुर्घटना या प्रसव जैसी आपात स्थिति में समय पर चिकित्सा सहायता मिलना जीवन बचाने के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। नई एम्बुलेंस सेवा इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

28 ग्राम पंचायतों की 39 हजार से अधिक आबादी को मिलेगा सीधा लाभ-नई एम्बुलेंस सेवा शुरू होने से 28 ग्राम पंचायतों में निवासरत 39,325 से अधिक लोगों को सीधा लाभ मिलेगा, अब तक क्षेत्र के ग्रामीणों को गंभीर मरीजों को अस्पताल पहुंचाने के लिए निजी वाहनों या दूरस्थ शहरों पर निर्भर रहना पड़ता था,कई बार समय पर वाहन उपलब्ध नहीं होने के कारण मरीजों और उनके परिजनों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था,अब एम्बुलेंस उपलब्ध होने से मरीजों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर जिला अस्पताल अथवा अन्य उच्च चिकित्सा संस्थानों तक शीघ्र पहुंचाना संभव हो सकेगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं होंगी और सशक्त-मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार महिलाओं, बच्चों और आमजन के स्वास्थ्य संरक्षण के लिए लगातार कार्य कर रही है, शासन का उद्देश्य प्रत्येक गांव और प्रत्येक परिवार तक बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना है, उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नई एम्बुलेंस न केवल आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं को गति देगी, बल्कि ग्रामीणों का स्वास्थ्य व्यवस्था पर भरोसा भी मजबूत करेगी।

ग्रामीणों ने जताया आभार-एम्बुलेंस सेवा शुरू होने पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने राज्य शासन के प्रति आभार व्यक्त किया, उनका कहना था कि अब गंभीर मरीजों,गर्भवती महिलाओं और दुर्घटना में घायल लोगों को समय पर अस्पताल पहुंचाने में काफी सुविधा मिलेगी, जिससे क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और विश्वास दोनों में वृद्धि होगी,नई एम्बुलेंस के संचालन से चांदनी बिहारपुर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और आपातकालीन चिकित्सा व्यवस्था को नई मजबूती मिलने की उम्मीद है।

गुरु पूर्णिमा पर गुरु सम्मान समारोह एवं महिला जागृति शिविर का आयोजन

मंत्री लक्ष्मी रजवाड़े ने दिलाया बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ का संकल्प

ग्राम खैरा में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों एवं गुरुजनों का हुआ सम्मान,शिक्षा,संस्कार और महिला सशक्तिकरण पर दिया गया विशेष जोर

-संवाददाता-
सूरजपुर,29 जुलाई 2026
(घटती-घटना)।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर भटगांव विधानसभा क्षेत्र के ओड़गी विकासखंड अंतर्गत ग्राम खैरा में गुरु सम्मान समारोह एवं महिला जागृति शिविर का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी रजवाड़े मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं,इस दौरान उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों एवं गुरुजनों का सम्मान कर समाज निर्माण और भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिए उनके योगदान की सराहना की, कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री श्रीमती लक्ष्मी रजवाड़े ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है, उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में माता-पिता,आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और शिक्षक मिलकर उसके व्यक्तित्व और संस्कारों की नींव तैयार करते हैं। ऐसे गुरुजनों का सम्मान करना समाज का नैतिक दायित्व है।

माता-पिता,आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और शिक्षक-बच्चों के जीवन के तीन प्रमुख गुरु-मंत्री ने कहा कि बच्चे के जीवन के प्रथम गुरु उसके माता-पिता होते हैं,जो उसे जीवन के प्रारंभिक संस्कार देते हैं, इसके बाद आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य और प्रारंभिक शिक्षा की जिम्मेदारी निभाती हैं,जबकि शिक्षक उन्हें ज्ञान और जीवन मूल्यों से जोड़ते हैं। इन तीनों की भूमिका मिलकर एक सशक्त और संस्कारित समाज के निर्माण का आधार बनती है, उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता केवल सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन नहीं करतीं, बल्कि मातृवत स्नेह और समर्पण के साथ बच्चों के भविष्य को संवारने का कार्य करती हैं, इसी भावना के साथ कार्यक्रम में उनका सम्मान किया गया।

महिला जागृति शिविर में दिलाया बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ का संकल्प-कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित महिला जागृति शिविर में मंत्री लक्ष्मी रजवाड़े ने उपस्थित महिलाओं,युवाओं और ग्रामीणों को बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ के निर्माण का संकल्प दिलाया,उन्होंने कहा कि बाल विवाह एक सामाजिक कुरीति है, जो बालिकाओं की शिक्षा,स्वास्थ्य और भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है,इसे समाप्त करने के लिए केवल शासन के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है, उन्होंने सभी से अपील की कि वे बाल विवाह रोकने के लिए जागरूकता फैलाएं,बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करें तथा महिलाओं और बेटियों को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने में सहयोग करें।

महिला सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता पर दिया जोर-मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए लगातार विभिन्न योजनाएं संचालित कर रही है,इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना,बच्चों को बेहतर पोषण और शिक्षा उपलब्ध कराना तथा समाज में जागरूकता बढ़ाना है,उन्होंने कहा कि जब समाज शिक्षित,जागरूक और कुरीतियों से मुक्त होगा,तभी विकसित और सशक्त छत्तीसगढ़ का निर्माण संभव होगा।

गुरुजनों के प्रति व्यक्त किया सम्मान-कार्यक्रम के अंत में मंत्री श्रीमती लक्ष्मी रजवाड़े ने सभी गुरुजनों को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं देते हुए उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त की, उन्होंने कहा कि गुरु ही समाज को सही दिशा देने वाले मार्गदर्शक होते हैं और उनका योगदान सदैव प्रेरणादायी रहेगा,इस अवसर पर क्षेत्र के जनप्रतिनिधि,आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, शिक्षक,महिला स्व-सहायता समूहों की सदस्याएं तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन गुरुजनों के सम्मान एवं सामाजिक जागरूकता के संदेश के साथ हुआ।

CMYK

यादगार बॉलीवुड विलेन : खिलजी से अबरार तक,इन खलनायकों ने छोड़ी अमिट छाप

सालों से बॉलीवुड हीरो को सबसे ज़्यादा तालियां मिलती रही हैं, लेकिन कुछ सबसे यादगार फिल्मी पल उन लोगों के नाम रहे हैं जो उनके ठीक उलट भूमिका में थे। पिछले कुछ सालों में,फिल्ममेकर्स ने ऐसे कई-परतों वाले, खतरनाक और ज़बरदस्त विलेन बनाने पर काफ़ी मेहनत की है, जिन्होंने न सिर्फ़ हीरो को चुनौती दी,बल्कि खुद भी पॉप कल्चर का हिस्सा बन गए। बेरहम शासकों से लेकर बेरहम मास्टरमाइंड तक,उन सात परफ़ॉर्मेंस पर नज़र डालते हैं जिन्होंने साबित किया कि एक दमदार विलेन पूरी फिल्म को एक अलग ही स्तर पर ले जा सकता है।

रणवीर सिंह :
अलाउद्दीन खिलजी (पद्मावत)

अलाउद्दीन खिलजी के तौर पर रणवीर सिंह की डरावनी परफ़ॉर्मेंस मॉडर्न हिंदी सिनेमा में विलेन के किरदारों के लिए एक बेंचमार्क बनी हुई है। उनका बेतहाशा जुनून, अप्रत्याशित बॉडी लैंग्वेज और अपनी इमेज को पूरी तरह से भुलाकर काम करने के अंदाज़ ने खिलजी को एक ऐसा किरदार बना दिया जिससे दर्शक नफ़रत करते हुए भी प्यार करते थे। सालों बाद भी,जब भी बॉलीवुड के मशहूर विलेन की बात होती है,तो इस परफ़ॉर्मेंस का जिक्र ज़रूर होता है।

सैफ अली खान :
उदयभान सिंह राठौड़ (तानाजी)

सैफ अली खान ने उदयभान सिंह राठौड़ के तौर पर अपनी रोंगटे खड़े कर देने वाली परफ़ॉर्मेंस से दर्शकों को हैरान कर दिया। क्रूरता और नफ़ासत के बीच संतुलन बनाते हुए, उन्होंने एक ऐसा विलेन बनाया जो बिना किसी दिखावे के ही डरावना लगता था। स्क्रीन पर उनकी दमदार मौजूदगी ने यह पक्का किया कि वे पूरी फ़िल्म में अजय देवगन के बराबर टक्कर दे सकें।

बॉबी देओल : अबरार हक (एनिमल)

कम डायलॉग होने के बावजूद, बॉबी देओल ने एनिमल में अबरार के तौर पर एक यादगार छाप छोड़ी। उनकी खामोश लेकिन खतरनाक मौजूदगी,तीखे एक्सप्रेशन और ज़बरदस्त एक्शन सीन ने उन्हें फ़िल्म की सबसे बड़ी चर्चाओं में से एक बना दिया। इस परफ़ॉर्मेंस ने बॉबी को एक बिल्कुल नए अवतार में पेश किया और उन्हें खूब तारीफ़ें दिलाईं।

जॉन अब्राहम : जिम (पठान)

जॉन अब्राहम ने पठान में जिम के किरदार में स्टाइल और इमोशनल गहराई जोड़ी। एक आम विलेन का किरदार निभाने के बजाय, उन्होंने धोखे और बदले की भावना से प्रेरित एक कई-परतों वाला विलेन पेश किया। उनकी फिजिकल मौजूदगी और शाहरुख खान के साथ ज़बरदस्त टकराव ने एक्शन फिल्म के स्तर को और भी ऊंचा कर दिया।

ऋषभ साहनी :
अहमद शाह अब्दाली (नागबंधन)

फाइटर में विलेन के तौर पर शानदार काम करने के बाद, ऋषभ साहनी ने नागबंधन के साथ अपने काम को एक और ऊंचे स्तर पर पहुँचाया। अहमद शाह अब्दाली और आज के ज़माने में उसके जैसे ही अली के रोल में, साहनी ने एक मुश्किल डबल रोल निभाया, जिसके लिए तलवारबाज़ी की ट्रेनिंग और अलग-अलग तरह के किरदारों में ढलने की ज़रूरत थी। स्क्रीन पर उनकी ज़बरदस्त मौजूदगी,डरावनी एक्टिंग और किरदार की कई परतों को दिखाने के अंदाज़ ने उन्हें इंडस्ट्री के सबसे होनहार नए ज़माने के विलेन के तौर पर स्थापित किया।

विजय सेतुपति :
काली गायकवाड़ (जवान)

मुश्किल किरदारों को आसानी से निभाने के लिए मशहूर विजय सेतुपति ने जवान में एक और यादगार विलेन का रोल निभाया। काली के तौर पर उनकी शांत लेकिन बेरहम एक्टिंग ने उन्हें एक ज़बरदस्त दुश्मन बना दिया, जिससे एक बार फिर साबित हुआ कि शांत और सधी हुई एक्टिंग अक्सर सबसे असरदार हो सकती है।

आर. माधवन :
वनराज कश्यप (शैतान)

आर. माधवन ने अपनी चार्मिंग इमेज से हटकर खतरनाक वनराज कश्यप का रोल निभाकर दर्शकों को चौंका दिया। उनके शांत अंदाज़, बेचैन कर देने वाली मुस्कान और मनोवैज्ञानिक हेर-फेर ने एक ऐसा विलेन बनाया जो ताकत के बजाय डर का सहारा लेता था,जिससे शैतान और भी ज़्यादा रोमांचक बन गई।

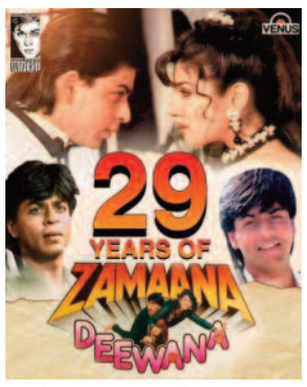

शोले के डायरेक्टर ने बनाई थी शाह रुख-रवीना की ये फ्लॉप फिल्म

मगर आज भी कानों में रस घोलते हैं इसके गाने...

रमेश सिप्पी द्वारा निर्देशित शाहरुख खान और रवीना टंडन की ये फिल्म 1995 में आई थी। हालांकि फिल्म असफल रही पर इसके गाने कल्ट क्लासिक बन गए। 90 के दशक में कुछ सितारे ऐसे रहे, जिनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर चर्चा में तो आई लेकिन फ्लॉप रहीं। हालांकि इन फिल्मों के गाने खूब हिट रहे।शोले जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म बनाने वाले दिग्गज फिल्ममेकर रमेश सिप्पी ने साल 1995 में एक ऐसी ही फिल्म बनाई,पर अफसोस फिल्म असफल रही,पर फिल्म का संगीत आज भी कानों में रस घोल देता है।

कौन सी है वह फिल्म?

दरअसल आज जिस फिल्म की हम चर्चा कर रहे हैं वो फिल्म साल 1995 में आई थी और फिल्म का नाम था जमाना दीवाना । जी हां, शाह रुख खान और रवीना टंडन स्टार इस फिल्म के गाने आज भी सुपरहिट हैं। हालांकि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर असफल रही थी। बड़ी बात यह थी कि इस फिल्म को शोले जैसी आइकॉनिक फिल्में बनाने वाले रमेश सिप्पी ने डायरेक्ट किया था।

फिल्म में शाह रुख और रवीना की कैमिस्ट्री भी पसंद की गई थी। हालांकि रवीना-शाह रुख ने साथ में ज्यादा फिल्में नहीं की हैं। उस दौर में जहां शाह रुख को लोग जूही चावला और काजोल जैसी एक्ट्रेसेस के साथ पसंद करते थे,तो वहीं रवीना की जोड़ी गोविंदा और अक्षय कुमार जैसे स्टार्स के साथ हिट रही। फिल्म में शाह रुख-रवीना के अलावा जीतेन्द्र और शत्रुघ्न सिन्हा जैसे दिग्गज एक्टर्स भी थे।

फिल्म के गाने आज भी हैं सुपरहिट

इस फिल्म का संगीत नदीम-श्रवण की जोड़ी ने तैयार किया था। 90 के दशक में नदीम-श्रवण की जोड़ी खूब हिट रही। दोनों ने साथ में मिलकर कई फिल्मों में शानदार संगीत दिया और इस फिल्म की कमान भी इसी जोड़ी ने संभाली और नतीजा यह हुआ कि फिल्म के गाने हिट रहे। फिल्म का गाना अब है नींद किसे चैन कहां आज भी सुपरहिट है। इस गाने को कुमार सानू और अलका याग्निक ने आवाज दी थी। वहीं गाने को समीर ने लिखा था। इसके अलावा फिल्म का एक और गाना जमाने को अब तक नहीं है पता भी खूब चर्चा में रहा। वहीं फिल्म का एक और गाना ओ रब्बा तो आज भी बसों और ट्रकों में बजता हुआ नजर आ ही जाता है। हाल ही में रवीना टंडन ने भी इस फिल्म के 31 साल पूरे होने पर सोशल मीडिया पर एक खास पोस्ट किया है। इस पोस्ट में रवीना ने शाह रुख को अपना फनी और मजेदार को-स्टार बताया। वहीं उन्होंने फिल्म के डायरेक्टर रमेश सिप्पी की भी तारीफ और फराह खान का भी जिक्र किया,जिन्होंने फिल्म के गाने कॉरियोग्राफ किए थे।

कृति सैनन ने ठुकरा दी थीं ये फिल्में, नाम जानकर रह जाएंगे हैरान

कृति सैनन ने पिछले एक दशक में अपने दमदार अभिनय और हर तरह के किरदारों के दम पर बॉलीवुड में खास पहचान बनाई है। रोमांस, कॉमेडी से लेकर गंभीर भूमिकाओं तक,उन्होंने हर शैली में खुद को साबित किया है। हालांकि,सफलता के इस सफर के दौरान कृति ने कई बड़ी फिल्मों के प्रस्ताव भी ठुकराए। ऐसे में आइए जानते हैं वे कौन-सी चर्चित फिल्में थीं, जिनमें काम करने से उन्होंने इनकार कर दिया था। साल 2015 में रिलीज हुई अक्षय कुमार कि फिल्म सिंह इज ब्लिंग में मुख्य अभिनेत्री का किरदार निभाने का ऑफर भी कृति को दिया गया था,लेकिन उन्होंने इसमें काम करने से साफ इनकार कर दिया था। साल 2017 में आई फिल्म हाफ गर्लफ्रेंड के निर्माता मुख्य भूमिका में कृति को लेना चाहते थे,लेकिन उन्होंने इस ऑफर को ठुकरा दिया। चेतन भगत के उपन्यास पर आधारित इस फिल्म को बाद में श्रद्धा कपूर ने किया था। साल 2018 में रिलीज हुई लस्ट स्टोरीज 2 में कियारा आडवाणी का किरदार पहले कृति को ऑफर हुआ था।

हालांकि,उन्होंने इसे करने से इनकार कर दिया था। उनका कहना था कि उनकी मां को यह भूमिका पसंद नहीं आई थी।एक्शन थ्रिलर फिल्म मलंग साल 2020 में रिलीज हुई थी। मोहित सूरी इस फिल्म में कृति को लेना चाहते थे,लेकिन उनके पास समय न होने की वजह से इस फिल्म में दिशा पाटनी को लिया गया। साल 2021 में आई ओटीटी फिल्म हसीन दिलरुबा में रानी सक्सेना का किरदार कृति को पेश किया गया था,लेकिन उन्होंने इसमें काम करने से साफ मना कर दिया। फिर तापसी पन्नू ने इसमें काम किया।2021 में ही रिलीज हुई कार्तिक आर्यन की फिल्म धमाका के निर्माताओं ने कृति को इसका ऑफर दिया था,लेकिन उन्होंने इसे ठुकरा दिया। ऐसे में बाद में मृणाल ठाकुर ने इस भूमिका को निभाया था।

निया शर्मा का प्यार भरा वेकेशन लुक, रोमांटिक तस्वीरों से रिश्ते को लेकर मिले संकेत

35 साल की टीवी एक्ट्रेस निया शर्मा ने सिकंदर सिंह के साथ मालदीव में अपनी रोमांटिक छुट्टियों की झलकियां शेयर करके डेटिंग की अफवाहों को हवा दी है। एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर अपनी इस ट्रिप की कई तस्वीरें शेयर की हैं,जिससे फैंस उनके रिलेशनशिप स्टेटस को लेकर उत्सुक हो गए हैं। क्या निया शर्मा सिकंदर सिंह को डेट कर रही हैं? तस्वीरों में निया को मालदीव के खूबसूरत नज़ारों के बीच छुट्टियों का मज़ा लेते हुए देखा जा सकता है। हालांकि एक्ट्रेस ने अपने रिश्ते की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है,लेकिन सिकंदर के साथ उनकी छुट्टियों की पोस्ट ने सबका ध्यान खींचा है और कई फैंस सोच रहे हैं कि क्या उन्होंने अपने रोमांस को सबके सामने ज़ाहिर कर दिया है। निया शर्मा ने अपने रोमांस की हल्की सी झलक दिखाई निया ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर कई तस्वीरें और वीडियो शेयर किए हैं। इनमें से एक तस्वीर में एक्ट्रेस और सिकंदर साथ में ड्रिंक का मज़ा लेते हुए दिख रहे हैं। एक और रोमांटिक तस्वीर में सिकंदर,निया का हाथ पकड़े हुए पोज़ दे रहे हैं,जबकि उन्होंने अपना चेहरा छिपा रखा है। ऐसा लग रहा है जैसे वे अपने रिश्ते की हल्की सी झलक (सॉफ्ट-लॉन्च) दे रहे हों। एक और तस्वीर में,दोनों को मालदीव के एक होटल के स्टाफ़ के साथ पोज़ देते हुए देखा जा सकता है। निया अक्सर अपने बोल्ड फ़ैशन चॉइस,एक्टिंग प्रोजेक्ट्स और बेबाक पर्सनैलिटी की वजह से चर्चा में रहती हैं। हालांकि,जब बात उनकी पर्सनल लाइफ़ की आती है,तो एक्ट्रेस आमतौर पर प्राइवेसी बनाए रखती हैं और अपने रिश्तों के बारे में खुलकर कम ही बात करती हैं। फिलहाल, छुट्टियों की इन तस्वीरों ने फैंस के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है और वे खुद एक्ट्रेस की तरफ़ से पुष्टि का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।

निया को आखिरी बार कुकिंग-बेस्ड रियलिटी शो लाफ्टर शेफ़्स सीज़न 3 में देखा गया था,जहाँ उनकी जोड़ी कॉमेडियन सुदेश लहरी के साथ बनी थी। हफ़्तों तक चले मज़ेदार कुकिंग चैलेंज के बाद,यह सीज़न अली गोनी और जन्नत ज़ुबैर ने जीता था।

फरहाना भट्ट का हैदराबाद दौरा कन्फर्म

फरहाना भट्ट आजकल भारतीय टेलीविज़न पर सबसे ज़्यादा चर्चा में रहने वाले चेहरों में से एक हैं। श्रीनगर की रहने वाली इस रियलिटी स्टार को बिग बॉस 19 में अपनी निडर और बेबाक पर्सनैलिटी की वजह से पूरे देश में पहचान मिली; उन्हें एक असली शेरनी का टैग मिला और देश भर में उनके बहुत सारे फ़ैन बन गए। खतरों के खिलाड़ी 15 में शामिल होने के बाद उनकी लोकप्रियता और भी बढ़ गई है,और अब हैदराबाद के फ़ैन्स के लिए जश्न मनाने का एक और मौका है। यह रियलिटी टीवी स्टार इस सितंबर में एक खास मीट-एंड-ग्रीट इवेंट के लिए शहर आ रही हैं। फरहाना भट्ट हैदराबाद एक्सपो में आएंगी फरहाना भट्ट को शीग्लैम एक्सपो सीज़न 3 के लिए मुख्य अतिथि के तौर पर घोषित किया गया है। यह एक लाइफ़स्टाइल एग्ज़िबिशन है जिसमें फ़ैशन,ब्यूटी,शॉपिंग और एंटरटेनमेंट एक ही जगह पर देखने को मिलते हैं। आयोजकों ने बताया है कि फरहाना 26 सितंबर को गुडीमलकापुर के किंग्स क्राउन कन्वेंशन में फ़ैन्स से मिलेंगी। यहाँ आने वाले लोगों को दो दिन की इस एग्ज़िबिशन का मज़ा लेने के साथ-साथ रियलिटी स्टार से बातचीत करने का मौका भी मिलेगा। 26 और 27 सितंबर को होने वाले शीग्लैम एक्सपो सीज़न 3 में शॉपिंग का शानदार अनुभव मिलेगा,जिसमें फ़ैशन,ब्यूटी और लाइफ़स्टाइल के कई ब्रांड्स के साथ-साथ दिलचस्प आकर्षण और खास अनुभव भी शामिल होंगे। वहीं, प्रोफ़ेशनल तौर पर, फरहाना भट्ट अब खतरों के खिलाड़ी 15 में नज़र आएंगी, जो 1 अगस्त को शुरू होने वाला है। फ़ैन्स उन्हें हिम्मत वाले स्टंट करते और अपनी रियलिटी टीवी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए देखने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।

खेल समाचार

हॉकी इंडिया ने एशियाई खेल आइची-नागोया 2026 के लिए पुरुष टीम की घोषणा की

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। हॉकी इंडिया ने बुधवार को आगामी 20वें एशियाई खेलों के लिए 20 सदस्यीय भारतीय पुरुष हॉकी टीम की घोषणा की। ये खेल 19 सितंबर से 4 अक्टूबर तक जापान के आइची-नागोया में आयोजित होंगे। एक विज्ञप्ति के अनुसार,स्टार डिफेंडर और ड्रैग-फ्लिकर हरमनप्रीत सिंह टीम की कप्तानी जारी रखेंगे, जबकि भारत के सबसे ज़्यादा मैच खेलने वाले अनुभवी मिडफील्डर मनप्रीत सिंह टीम को अपना अहम अनुभव देंगे। इस टीम में अनुभवी खिलाड़ियों और उभरती प्रतिभाओं का मिश्रण है। गोलकीपिंग यूनिट में मोहित एचएस और सूरज करकेरा शामिल हैं,जबकि डिफेंस लाइन में जरमनप्रीत सिंह,हरमनप्रीत सिंह,अमित रोहिदास,जुगराज सिंह,संजय,सुमित और यशदीप सिवाच हैं। मिडफील्ड को संभालने के लिए टीम राजिंदर सिंह,राज कुमार पाल, हार्दिक सिंह,मनप्रीत सिंह,नीलाकांता शर्मा और विवेक सागर प्रसाद पर निर्भर करेगी। वहीं,अटैकिंग लाइन की कमान दिलप्रीत सिंह,शिलानंद लाकरा, सुखजीत सिंह,मनदीप सिंह और अभिषेक संभालेंगे। भारत,जो 2023 में हांग्जो एशियाई खेलों में हरमनप्रीत की कप्तानी में गोल्ड मेडल जीतकर डिफेंडिंग चैंपियन के तौर पर टूर्नामेंट में उतरेगा,उसे मेजबान जापान,कोरिया, बांग्लादेश,श्रीलंका और इंडोनेशिया के साथ पूल ए में रखा गया है।

मैं अपने नेशनल रिकॉर्ड्स का हिसाब नहीं रखता : गुलवीर सिंह

मुंबई,29 जुलाई 2026। एथलीट गुलवीर सिंह ने कॉमनवेल्थ गेम्स में पुरुषों की 10,000 मीटर स्पर्धा में मेडल जीतने वाले पहले भारतीय बनकर इतिहास रच दिया। लंबी दूरी के इस धावक ने 2026 कॉमनवेल्थ गेम्स में सिल्वर मेडल जीता, जो भारतीय एथलेटिक्स के लिए एक बड़ी उपलब्धि है और उनकी अंतरराष्ट्रीय सफलताओं की बढ़ती सूची में एक और मील का पत्थर है। यह ऐतिहासिक सिल्वर मेडल पहली बार है जब किसी भारतीय ने कॉमनवेल्थ गेम्स में पुरुषों की 10,000 मीटर स्पर्धा में पोडियम पर जगह बनाई है। गुलवीर की यह उपलब्धि भारत के प्रमुख लंबी दूरी के धावकों में उनकी स्थिति को और मजबूत करती है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय एथलेटिक्स की लगातार बढ़ती प्रगति को दर्शाती है।

आर्मी के इस एथलीट ने 27: 49.78 का समय लिया,वे पूरे समय लीडिंग ग्रुप के साथ बने रहे और आखिर में ऑस्ट्रेलिया के काई रॉबिन्सन के पीछे रहते हुए शानदार फाइनल-लैप स्प्रिंट लगाई।

900 से ज्यादा पॉइंट्स हासिल करने वाले 4 बल्लेबाज

भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन ने आईसीसी टी 20 आई बल्लेबाजी रैंकिंग में एक और बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली है...900 से ज्यादा रेटिंग पॉइंट्स हासिल करने वाले भारत के चौथे बल्लेबाज बन गए हैं...

नई दिल्ली,29 जुलाई 2026। भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन ने आईसीसी टी20 आई बल्लेबाजी रैंकिंग में एक और बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली है। शानदार फॉर्म का इनाम उन्हें रैंकिंग में भी मिला और अब वह 900 से ज्यादा रेटिंग पॉइंट्स हासिल करने वाले भारत के चौथे बल्लेबाज बन गए हैं। ईशान ने 904 रेटिंग पॉइंट्स के साथ इस खास क्लब में जगह बनाई। इससे पहले यह कारनामा केवल विराट कोहली,सूर्यकुमार यादव और अभिषेक शर्मा ही कर पाए थे। हालिया अपडेट में ईशान आईसीसी टी20 रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर भी काबिज हैं।

खास क्लब में शामिल हुए ईशान किशन

आईसीसी की बल्लेबाजी रैंकिंग में 900 या उससे अधिक रेटिंग पॉइंट्स हासिल करना किसी भी बल्लेबाज के लिए बड़ी उपलब्धि माना जाता है। यह दर्शाता है कि खिलाड़ी ने लगातार उच्च स्तर का प्रदर्शन किया है। दुनिया के चुनिंदा बल्लेबाज ही इस मुकाम तक पहुंच पाए हैं और अब ईशान किशन का नाम भी उनमें शामिल हो गया है।

भारत की ओर से इस सूची की शुरुआत विराट कोहली ने की थी। कोहली ने अपने करियर के दौरान 909 रेटिंग पॉइंट्स हासिल किए थे।

इसके बाद सूर्यकुमार यादव ने अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी से 912 रेटिंग पॉइंट्स तक पहुंचकर नया मुकाम बनाया। फिर युवा सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने 2025 में 931 रेटिंग पॉइंट्स हासिल किए, जो किसी भी भारतीय बल्लेबाज की अब तक की सर्वश्रेष्ठ टी20 रेटिंग है।

904 पॉइंट्स के साथ ईशान सबसे ऊपर

अब ईशान किशन ने 904 रेटिंग पॉइंट्स के साथ इस प्रतिष्ठित सूची में चौथे भारतीय के रूप में अपनी जगह बना ली है। पिछले कुछ महीनों में उन्होंने लगातार आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए भारत के लिए कई मैच जिताऊ पारियां खेली हैं।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार अम्बिकापुर-2, जिला-सरगुजा (छ0ग0)

रा0प्र0क0-/अ-6/2025-26

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका शबनम पति महबूब,जाति साई मुसलमान, निवासी ग्राम रनपुरखुर्द, तहसील अम्बिकापुर,जिला सरगुजा छ0ग0 द्वारा ग्राम रनपुरखुर्द स्थित भूमि खसरा नंबर 214/2 मेसे रकबा 0.024 हे0 भूमि पर से पंजीबद्ध विक्रयपत्र दिनांक 25.07.2005 के आधार पर विक्रेता दोन्दा आ0 बुढउ,जाति मुसलमान, निवासी ग्राम रनपुरखुर्द, थाना व तहसील अम्बिकापुर,जिला सरगुजा छ0ग0 का नाम विलोपित कराकर उपरोक्त विक्रयपत्र के आधार पर अपना नाम दर्ज कराने बावत् आवेदन पत्र छ0ग0 भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 110 के तहत् प्रस्तुत किया गया है।

उक्त संबंध में किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 21/8 /2026 को न्यायालय में स्वंय अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है । समय सीमा के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा ।

आज दिनांक 24/07 /2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी ।

सील **अतिरिक्त तहसीलदार,** अम्बिकापुर-2

न्यायालय नजूल अधिकारी, अम्बिकापुर जिला- सरगुजा (छ0ग0)

रा0प्र0क्र0-/...../ अ-20 (3)/2025-26

ईश्तहार

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती फखरून निशा पति जाकिर हुसैन, निवासी मोमिनपुरा, अम्बिकापुर, तहसील अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा छ0ग0 के द्वारा शीट नम्बर-08 मोहल्ला-परांडांड़, नगर अम्बिकापुर स्थित नजूल प्लाट नम्बर 2484/40 रकबा 0.03 एकड़ भूमि को बैक में बंधक रखने की अनापत्ति प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र मय मेन्टनेस खसरा की प्रति सहित पेश किया गया है।

उक्त भू-खण्ड के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक- **07/08/2026** तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते है। नियत समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

आज दिनांकः- **20/07/2026** को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी ।

सील **नजूल अधिकारी अंबिकापुर**

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,

रा.प्र.क्र./20(1)/2025-26

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक /आवेदिका सुकवरिया कन्नौजिया आ0 /पति स्व0 भगवान दास कन्नौजिया जाति, निवासी सदर रोड़ अम्बिकापुर, तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया गया है कि मोहल्ला देवीगंज रोड़ / सदर रोड, मायापुर, शीट नम्बर-2, 8, 3 नगर अम्बिकापुर स्थित नजूल प्लाट नम्बर 545/4, 546/4 एवं 2721/1 तथा 1593/8 रकबा 0.003, 0.005 रकबा 0.02, 0.11 हे0/ एकड भूमि का लीज अवधि दिनांक 31.3.2026 को समाप्त हो गई है। जिस कारण आवेदक/आवेदिका द्वारा लीज अवधि बढ़ाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा/आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक- 05.08.2026 तक इस न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा ।

आज दिनांक- 22.07.2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील **नजूल अधिकारी ,अंबिकापुर**

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,

रा.प्र.क्र./20(1)/2025-26

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक / आवेदिका अरविन्द कन्नौजिया आ0/ पति स्व0 भगवान दास कन्नौजिया जाति निवासी सदर रोड अम्बिकापुर तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया गया है कि मोहल्ला बाबूपारा शीट नम्बर-9 नगर अम्बिकापुर स्थित नजूल प्लाट नम्बर 3467/4866/ 159 रकबा 1625 वर्गफीट भूमि का लीज अवधि दिनांक 31.3.2026 को समाप्त हो गई है। जिस कारण आवेदक / आवेदिका द्वारा लीज अवधि बढ़ाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा/ आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक- 05.08.2026 तक इस न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेंगा।

आज दिनांक- 22.07.2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील **नजूल अधिकारी ,अंबिकापुर**

न्यायालय तहसीलदार सूरजपुर जिला-सूरजपुर,छत्तीसगढ़

क्रमांक/3039 वाचक-2/2026 सूरजपुर दिनांक - 29/07/2026

ईश्तहार

सर्व साधारण ग्रामवासी /नगरवासी ग्राम/नगर लाछा प0ह0नं0 14 तहसील सूरजपुर जिला -सूरजपुर को सूचित किया जाता है कि आवेदक सोपाड़ी लाल पिता फुल साय जाति गोड़ निवासी ग्राम लाछा पोस्ट केतका थाना सूरजपुर तहसील सूरजपुर जिला -सूरजपुर (छ0ग0) ने अपने पिता फुल साय पिता नान्ही का मृत्यु तिथि 06/06/1999 स्थान लाछा के जन्म/मृत्यु पत्र हेतु आंवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया है, जिसमें कार्यवाही की जा रही है।

अतः इस न्यायालय में जिस व्यक्ति को कोई दावा/आपत्ति / आक्षेप हो तो वे स्वयं अथवा अपनें अभिभावक द्वारा इस न्यायालय में दिनांक 12/08/2026 दिन बुधवार को उपस्थित होकर दावा /आपत्ति/आक्षेप प्रस्तुत कर सकते है। बाद में प्राप्त दावा आपत्ति/आक्षेप पर कोई विचार नहीं किया जायेगा ।

आज दिनांक 29/07/2026 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुहर से जारी किया गया ।

सील **नायब तहसीलदार उप तह.मानी,सूरजपुर**

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में 49 लाख के इनामी आठ नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण...

बीजापुर,29 जुलाई 2026। जिले में नक्सल विरोधी अभियान के तहत पुलिस को एक बड़ी सफलता मिली है। झारखंड में सक्रिय माओवादी संगठन के कुल 49 लाख के इनामी 8 हार्डकोर माओवादियों ने हिंसा का रास्ता छोड़ते हुए बीजापुर पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। आत्मसमर्पण करने वालों में एक दंपति समेत 5 महिला और 3 पुरुष माओवादी शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, आत्मसमर्पण करने वाले सभी माओवादी लंबे समय से झारखंड के दक्षिण जोनल कमेटी,सरांडा सब जोनल कमेटी और कोल्हान एरिया कमेटी के तहत सक्रिय थे। संगठन में वे डीवीसीएम,जेडसीएम,एसीएमऔर सुरक्षा गार्ड जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे हैं। इन माओवादियों पर सुरक्षा बलों पर हमले,आईईडी विस्फोट, पुलिस पार्टी पर घात लगाकर हमला,सड़क निर्माण कार्यों में बाधा पहुंचाना,निर्माण मशीनों और वाहनों को आग लगाना,ठेकेदारों से लेवी वसूली, नए

कैडरों की भर्ती और संगठन विस्तार जैसी कई नक्सली गतिविधियों में शामिल रहने के आरोप हैं। सभी पर मिलाकर 49 लाख का इनाम घोषित था। एसपी उमेश गुप्ता ने बताया कि सुरक्षा बलों की लगातार कार्रवाई, माओवादी संगठन की कमजोर होती स्थिति, हिंसक विचारधारा से मोहभंग,पूर्व नक्सलियों के सफल पुनर्वास और आदिवासी क्षेत्रों में तेजी से हो रहे विकास कार्यों से प्रभावित होकर इन माओवादियों ने मुख्यधारा में लौटने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ शासन की नक्सल आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति के तहत सभी आत्मसमर्पित माओ वादियों को आर्थिक सहायता,कौशल विकास प्रशिक्षण, आवास, शिक्षा,स्वरोजगार और रोजगार जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

लच्छू बोला...अब खेती कर सामान्य जीवन जीना चाहता हूं

आत्मसमर्पण करने वालों में शामिल लच्छू, जो मूल रूप से बीजापुर जिले के सावनार (थाना गंगालूर) का निवासी है,वर्ष 2014 में झारखंड के माओवादी संगठन से जुड़ा था। उसने बताया कि झारखंड में माओवादी संगठन लगभग समाप्त हो चुका है। उसने पहले आत्मसमर्पण के लिए संपर्क सूत्र बनाए और फिर हथियार संगठन के पास छोड़कर अपनी जान बचाते हुए बीजापुर पहुंचा,जहां पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया। लच्छू ने कहा कि अब वह अपने गांव लौटकर खेती करना और सामान्य जीवन जीना चाहता है।

छत्तीसगढ़ भाजपा अध्यक्ष किरण सिंह देव सड़क हादसे में घायल

रायपुर,29 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष और जगदलपुर से विधायक किरण सिंह देव बुधवार को उत्तर प्रदेश के ललितपुर के पास एक सड़क हादसे में घायल हो गए। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है,जहां डॉक्टरों की निगरानी में उनका इलाज चल रहा है। उन्हें एयरलिफ्ट कर रायपुर लाने की भी तैयारी की जा रही है। हादसे के समय उनकी पत्नी और बच्चे दूसरी गाड़ी में सवार थे,इसलिए वे पूरी तरह सुरक्षित हैं। पार्टी सूत्रों के अनुसार छत्तीसगढ़ भाजपा अध्यक्ष किरण सिंह देव मध्य प्रदेश स्थित बागेश्वर धाम में दर्शन-पूजन करने के बाद छत्तीसगढ़ लौट रहे थे। रास्ते में उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के तालबेहट क्षेत्र में झांसी-ललितपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर झरर घाट के उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हाईवे पर सामने से आ रहे एक वाहन को बचाने के प्रयास में गाड़ी अनियंत्रित हो गई और सड़क किनारे खड़े एक ट्रक में पीछे से जा टकराई। इससे किरण सिंह देव की कमर में चोट आई है, जिससे उन्हें चलने-फिरने में तकलीफ हो रही है। झांसी मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों द्वारा की गई शुरुआती जांच में किसी फ्रैक्चर की पुष्टि नहीं हुई

है और उनकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। कार में सवार उनके पीएसओ, पीए और चालक को मामूली चोटें आई हैं। राहत की बात यह रही कि काफिले में पीछे चल रही अन्य सभी गाड़ियां पूरी तरह सुरक्षित हैं। बताया जा रहा है कि किरण सिंह देव परिवार के साथ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अपने निजी कार्यक्रम के तहत बागेश्वर धाम गए थे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने किरण सिंह देव के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा,''प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं जगदलपुर विधायक किरण सिंह देव के सड़क दुर्घटना में घायल होने की सूचना मिली। उनका इलाज झांसी मेडिकल कॉलेज में चल रहा है।

बिलासपुर सेन्ट्रल-जेल में जलती भट्ठी में कूदकर कैदी का सुसाइड

डबल मर्डर केस में उम्रकैद काट रहा था,एक महीने में 5 बंदियों की मौत

बिलासपुर,29 जुलाई 2026। बिलासपुर सेंट्रल जेल में बुधवार को डबल मर्डर के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे कैदी ने सुसाइड कर लिया। बंदी ने जेल परिसर में गैसीफायर प्लांट की जलती भट्ठी में छलांग लगा दी। शुरुआती जानकारी के अनुसार मृतक की पहचान राहुल ऊर्फ विकेश कंवर (46) के रूप में हुई है,जो बम्हनीडीह चांपा का रहने वाला था। राहुल पिछले 10 साल से जेल में बंद था। बता दें कि बिलासपुर सेंट्रल जेल में पिछले एक महीने में 5 बंदियों की मौत हो चुकी है। 23 जून को पॉक्सो के आरोपी नीलू जगत की हत्या जेल के भीतर हुई थी। इसके बाद रायगढ़ निवासी आजीवन कारावास की सजा काट रहे रामभरोसे माझी की तबीयत बिगड़ने के बाद मौत हुई। जून में ही गतौरा निवासी राजू गोंड और उससे पहले धर्मेंद्र सिंह की भी जेल में मौत हुई थी। घटना की सूचना मिलते ही कलेक्टर संजय अग्रवाल और स्स्क रजनेश सिंह सहित पुलिस अफसरों की टीम सेंट्रल जेल पहुंची। घटनास्थल का निरीक्षण कर जेल अधिकारियों से जानकारी ली। स्स्स्रु और पुलिस की टीम भी जांच में जुट गई है।

लकड़ियों से गैस बनती है,उसी गैसीफायर की भट्ठी में कूदा : जेल परिसर में स्थापित गैसीफायर प्लांट में लकड़ियां डालकर गैस तैयार की जाती है। इसी गैस का उपयोग जेल की रसोई में कैदियों का भोजन पकाने के लिए किया जाता है। बताया जा रहा है कि प्लांट की भट्ठी उस समय चालू थी। इसी दौरान कैदी अचानक वहां पहुंचा और देखते ही देखते जलती भट्ठी में कूद गया। जब तक जेलकर्मी उसे बचाने का प्रयास करते,तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

पहले भी सुर्खियों में रही है सेंट्रल जेल : बिलासपुर सेंट्रल जेल पहले भी कई गंभीर घटनाओं को लेकर चर्चा में रही है। जेल के भीतर बंदियों के बीच मारपीट,संदिग्ध मौत,मोबाइल बरामदगी,नशे का सामान मिलने और सुरक्षा व्यवस्था में लापरवाही जैसे मामलों पर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। ताजा घटना ने एक बार फिर जेल प्रबंधन और सुरक्षा इंतजामों को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

कलेक्टर बोले...मामले की जांच जारी : मौके पर पहुंचे कलेक्टर संजय अग्रवाल ने बताया कि बंदी किचन में गैसीफायर में कूद गया। वह दो मर्डर के केस में आजीवान कारावास की सजा काट रहा था। 10 साल से जेल में बंद था। मामले की जांच की जा रही है।

रायपुर में पीतल को सोना बताकर 22 लाख की ठगी

मुंबई से 3 लोगों को किया गिरफ्तार,बताया...खुदाई में पुराना सोना मिला

रायपुर,29 जुलाई 2026। 'खुदाई में पुराने जमाने का सोना मिला है...बहन की शादी है, इसलिए सस्ते में बेच रहे हैं।' इस कहानी पर भरोसा कर रायपुर के तीन लोगों ने लाखों रुपए गंवा दिए। ठग पहले हार का छोटा टुकड़ा तोड़कर जांच कराते थे। वह असली सोना निकलता था। इसके बाद पूरा हार बेच देते,लेकिन बाद में पता चलता कि वह पीतल का है। करीब 22.50 लाख रुपए की इस ठगी का खुलासा करते हुए रायपुर पुलिस ने अंतरराज्यीय गिरोह के मास्टरमाइंड शंभू राय समेत तीन आरोपियों को मुंबई से गिरफ्तार किया है। पुलिस का दावा है कि इसी गिरोह ने रायपुर के न्यू राजेंद्र नगर,तेलीबांधा और डीडी नगर थाना क्षेत्र में तीन अलग-अलग वारदातों को अंजाम दिया। शुरुआती जांच में गिरोह के उत्तर प्रदेश,बिहार,झारखंड और महाराष्ट्र समेत कई राज्यों में सक्रिय होने और करोड़ों रुपए की ठगी करने के संकेत मिले हैं।

एक जैसी कहानी,एक जैसा तरीका

जांच के दौरान पुलिस ने पाया कि तीनों मामलों में आरोपियों का तरीका बिल्कुल एक जैसा था। वे खुद को दिहाड़ी मजदूर या खुदाई का काम करने वाला बताते थे। फिर दावा करते कि खुदाई के दौरान उन्हें पुराने सोने के गहने और सिक्के मिले हैं। विश्वास जीतने के लिए वे हार का पहले से तैयार रखा गया असली सोने का छोटा टुकड़ा तोड़कर जांच के लिए देते थे। ज्वेलर्स से उसके असली होने की पुष्टि

होते ही पीड़ित भरोसा कर लाखों रुपए में पूरा हार खरीद लेता। बाद में पता चलता कि पूरा हार पीतल का है और आरोपी मोबाइल बंद कर गायब हो चुके हैं।

स्टोन बेचने के बहाने चुनता था शिकार : पुलिस के मुताबिक,मुख्य आरोपी शंभू राय अलग-अलग शहरों में राशि पत्थर (स्टोन) बेचने का काम करता था। इसी दौरान वह आर्थिक रूप से सक्षम लोगों पर नजर रखता और उन्हें अपना शिकार बनाता था। पूछताछ में खुलासा हुआ कि गिरोह दिल्ली के करोल बाग से पीतल के हार और अन्य नकली आभूषण खरीदता था। इन्हें पुराना खजाना बताकर बाजार कीमत से काफी कम दाम में बेचने का लालच दिया जाता था।

रायपुर में ऐसे हुई 22.5 लाख की ठगी...

न्यू राजेंद्र नगर में एक कारोबारी से 2.50 लाख रुपए ठगे। तेलीबांधा में मोबाइल एक्सेसरीज कारोबारी को 10 लाख रुपए में पीतल का हार बेच दिया। डीडी नगर में 2 किलो पुराना सोना बताकर एक युवक से 10 लाख रुपए ले लिए।

मुंबई से दबोचा,9 लाख कैश और 4 फर्जी आधार कार्ड मिले

तकनीकी जांच और मोबाइल लोकेशन के आधार पर पुलिस टीम मुंबई पहुंची और शंभू राय,गीता गुजराती और शांति गुजराती को गिरफ्तार किया। आरोपियों के कब्जे से 9 लाख रुपए नकद,12 चांदी के सिक्के,पीतल के कई आभूषण,चार मोबाइल फोन जब्त किए गए हैं। मुख्य आरोपी के पास से चार अलग-अलग फर्जी आधार कार्ड भी मिले हैं, जिनकी जांच की जा रही है।

अब दूसरे राज्यों से भी मांगी जा रही जानकारी

पुलिस के अनुसार,आरोपियों ने पूछताछ में कई राज्यों में एक दर्जन से ज्यादा वारदातें करना स्वीकार किया है। अब संबंधित राज्यों की पुलिस से संपर्क कर इनके आपराधिक रिकॉर्ड खंगाले जा रहे हैं। गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश भी जारी है।

आक्टोपस बार में भीषण आगजनी... बाइक-कार जली,होटल और 3 दुकानें खाक

रायपुर,29 जुलाई 2026। बीती रात शहर के तेलीबांधा स्थित आक्टोपस बार में अचानक आग लग गई। आग इतनी भीषण थी कि बार के बाहर खड़ी 3-4 बाइक और 1 कार जलकर खाक हो गई। गनीमत रही कि इस हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। संकरे भवन और लगातार बारिश के बीच फायर ब्रिगेड को आग बुझाने में कई घंटे लग गए। आग की चपेट में बार के साथ 3 अन्य दुकानें और पास का एक होटल भी आ गए।

लपटें उठीं तो आग का पता चला : प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक घटना रात करीब 1 बजे की है। उस समय बार खुला हुआ था और अंदर कुछ कर्मचारी मौजूद थे। अचानक आग की लपटें उठने लगीं और कुछ ही देर में पूरा इलाका धुएं से भर गया। आग की तेज लपटों

को देखकर आसपास के लोगों में दहशत फैल गई। सूचना मिलते ही तेलीबांधा पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची।

बचाव कार्य में आई दिक्कत : बार एक संकरे भवन में संचालित था जिसकी वजह से दमकल की गाड़ियों को अंदर पहुंचने में परेशानी हुई। इसके अलावा लगातार बारिश होने के बावजूद आग पर काबू पाने में घंटों मशक्कत करनी पड़ी। पुलिस और फायर टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस दौरान बार में मौजूद कर्मचारियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया।

कितना हुआ नुकसान? आग में आक्टोपस बार के अलावा कम से कम 3 अन्य दुकानें भी जल गईं। दुकानों में रखा लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया। बार के ठीक पास स्थित एक होटल भी आग की चपेट में आ गया। होटल में ठहरे मेहमान समय रहते बाहर निकल गए और अपनी जान बचाई। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि आग इतनी तेजी से फैली कि लोगों को सामान निकालने तक का मौका नहीं मिला।

पुलिस क्या कह रही है...

तेलीबांधा थाना प्रभारी टीआई अजय झा ने बताया कि शुरुआती जांच में आग का शुरुआती बिंदु हार्डवेयर की दुकान का सामने आ रहा है। लेकिन आग लगने के असली कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है।

सर्पदंश मुआवजा घोटाला,पूर्व तहसीलदारों को नोटिस जारी...

बिलासपुर,29 जुलाई 2026। बहुचर्चित सर्पदंश मुआवजा वितरण घोटाले की जांच में सरकंडा पुलिस ने सात वर्तमान और पूर्व तहसीलदारों को बयान दर्ज कराने के लिए नोटिस भेजा है। पुलिस ने यह नोटिस व्हाट्सएप के माध्यम से भेजे हैं,लेकिन नोटिस मिलने के बावजूद अब तक कोई भी अधिकारी बयान देने नहीं पहुंचा है।

पुलिस ने बताया कि मामले की जांच जारी है और अधिकारियों से पूछताछ के बाद कई अहम तथ्य सामने आ सकते हैं। जरूरत पड़ने पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। बिलासपुर जिले के कोटा विकासखंड के गोबरीपाट स्थित डीएवी स्कूल में प्रार्थना सभा के दौरान राजकीय गीत नहीं गाने पर छात्र की पिटाई किए जाने का मामला सामने आया है।

धमतरी के सोंदूर डैम के 5 गेट खुले

कैचमेंट एरिया में बारिश से बढ़ा जलस्तर,5 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा

धमतरी,29 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में भारी बारिश के बाद सोंढूर बांध के पांच गेट खोल दिए गए हैं। बांध से सोंढूर नदी में 5,000 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। कैचमेंट क्षेत्रों में लगातार वर्षा के कारण जलाशयों में जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। धमतरी जिले में लगातार हो रही भारी वर्षा के कारण सोंढूर, दुधावा और गंगरेल जलाशयों के कैचमेंट क्षेत्रों में पानी बढ़ गया है। जलाशयों के सुरक्षित संचालन, बाढ़ प्रबंधन और जलस्तर को सुरक्षित सीमा में बनाए रखने के उद्देश्य से यह जल प्रबंधन किया जा रहा है। वर्तमान में सोंढूर जलाशय अपनी कुल क्षमता के 75.02 प्रतिशत पर है, जहां 2,205 क्यूसेक जल की आवक दर्ज की जा रही है। दुधावा जलाशय 81.14 प्रतिशत क्षमता

पर है और इसमें 4,440 क्यूसेक पानी आ रहा है। वहीं,गंगरेल जलाशय 50.04 प्रतिशत क्षमता पर है, जिसमें 6,261 क्यूसेक जल की आवक हो रही है। सोंढूर जलाशय के कैचमेंट क्षेत्र में लगातार वर्षा से वर्तमान में 15,256 क्यूसेक पानी की आवक हो रही है,जिसमें लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। उच्च अधिकारियों के निर्देश पर सोंढूर बांध से सोंढूर नदी में 5,000 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है, जिसे आवश्यकता पड़ने पर बढ़ाया जा सकता है।

इसके मद्देनजर सोंढूर नदी के किनारे बसे क्षेत्रों के लिए अलर्ट जारी कर दिया गया है। इसी प्रकार, दुधावा जलाशय में वर्तमान में 7,454 क्यूसेक पानी की आवक होने के कारण वहां से 3,000 क्यूसेक पानी नदी में छोड़ा जा रहा है, जो आगे गंगरेल जलाशय में पहुंचेगा।

माओवादियों के प्रेशर आईईडी में हुआ विस्फोट : अलग-अलग घटनाओं में पर्यटक दल का एक सदस्य सहित दो नाबालिग घायल

बीजापुर,29 जुलाई 2026। जिले के उसूर थाना क्षेत्र में माओवादियों द्वारा पूर्व में लगाए गए प्रेशर आईईडी की चपेट में आने से बुधवार को दो अलग-अलग घटनाओं में दो नाबालिग घायल हो गए। इनमें एक सुकमा जिले से नीलम सराई जलप्रपात घूमने आए पर्यटक दल का सदस्य है, जबकि दूसरा ग्रामीण मवेशी चराने के दौरान विस्फोटक की चपेट में आ गया। पुलिस के अनुसार,पहली घटना में सुकमा जिले के चिंतागुफा थाना क्षेत्र स्थित ग्राम करीगुण्डम के 7-8 युवक और नाबालिग नीलम सराई जलप्रपात घूमने आए थे। जलप्रपात से करीब डेढ़ किलोमीटर पहले माओवादियों द्वारा पूर्व में लगाए गए प्रेशर आईईडी पर पैर पड़ने से 13 वर्षीय सोढ़ी देवा,पिता हुंगा सोढ़ी, घायल हो गया। विस्फोट में उसके दाहिने पैर की एड़ी में चोट आई। घायल नाबालिग को तत्काल उसूर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया,जहां प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए जिला चिकित्सालय रेफर किया गया। चिकित्सकों के अनुसार उसकी स्थिति फिलहाल स्थिर है। दूसरी

घटना ग्राम नम्बी के जंगल क्षेत्र में हुई। यहां दो ग्रामीण मवेशी चराने नम्बी जलधारा की ओर गए थे। इसी दौरान जंगल में माओवादियों द्वारा पूर्व में लगाए गए प्रेशर आईईडी की चपेट में आने से 15 वर्षीय विनोद कट्टम, पिता चन्द्रु कट्टम,घायल हो गया। विस्फोट में उसके दाहिने पैर की एड़ी में चोट आई है। पुलिस ने बताया कि घटना स्थल तक जाने वाले मार्ग में पड़ने वाले नाले में लगातार हो रही भारी बारिश के कारण जलभराव हो गया है,जिससे आवागमन प्रभावित है।

फंड है फिर भी बच्चों को नहीं मिल रही मिलेट-चिक्की : मिड-डे मील में... भेदभाव पर हाईकोर्ट सख्त,पूछा...26 जिलों के बच्चों को क्यों रखा गया बाहर

बिलासपुर,29 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ के सरकारी स्कूलों में चल रही प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण (मिड-डे मील) योजना को लेकर हाईकोर्ट ने सरकार से जवाब मांगा है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रवींद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने पूछा कि जब बच्चों को पौष्टिक आहार देने के लिए हफ्ते में तीन दिन 20 ग्राम मिलेट चिक्की (बाजरा, कोदो-कुटकी) देने का फैसला हुआ है,तो यह सिर्फ 7 जिलों में ही क्यों लागू है। बाकी 26 जिलों के बच्चों को इससे क्यों वंचित रखा गया है। दरअसल, स्कूलों में मिड-डे मील योजना की खराब व्यवस्था और गड़बड़ियों की खबरें लगातार मीडिया में सामने आ रही थीं। इसे देखते हुए हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा ने एक्शन लिया। मामले को जनहित याचिका

मानकर सुनवाई शुरू की गई। डिवीजन बेंच ने जांच के लिए न्यायमित्र नियुक्त किया और उन्हें स्कूलों में मिड-डे मील योजना की वास्तविक स्थिति की जानकारी लेने का निर्देश दिया। वहीं, अब मामले की अगली सुनवाई 12 अक्टूबर को होगी।

सिर्फ 7 जिलों में मिलेट चिक्की, बाकी बच्चे बाहर : सुनवाई के दौरान न्यायमित्र ने मुख्य सचिव के शपथ पत्र के पैरा-7 का हवाला दिया। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने माना है कि 20 ग्राम मिलेट चिक्की का वितरण सिर्फ नियद नेल्लानार योजना वाले 5 जिलों और जशपुर,रायगढ़ समेत कुल 7 जिलों में ही किया जा रहा है। न्यायमित्र ने सवाल उठाया कि जब पूरे प्रदेश के बच्चों की पोषण संबंधी जरूरतें एक जैसी हैं, तो बाकी 26 जिलों के लाखों स्कूली बच्चों को इस योजना से बाहर रखना समानता के अधिकार के खिलाफ है। साथ ही यह बच्चों के स्वास्थ्य के साथ भी खिलवाड़ है।हाईकोर्ट के 15 अप्रैल 2026 के आदेश का पालन करते हुए मुख्य सचिव ने अपना शपथ पत्र पेश किया। इसमें बताया गया कि 18 जून 2026 को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में पीएम पोषण योजना की राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक हुई थी। बैठक में शिक्षा, खाद्य, कृषि, वित्त, महिला-बाल विकास और स्वास्थ्य विभाग के सचिवों के साथ रायपुर और कोंडागांव के कलेक्टर भी शामिल हुए। बैठक में मिड-डे मील योजना को बेहतर बनाने के लिए एक्शन प्लान तैयार कर उस पर काम करने के निर्देश दिए गए। मुख्य सचिव ने बताया कि मिड-डे मील योजना में गड़बड़ियों और खाद्यान्न की चोरी रोकने के लिए कई बड़े बदलाव किए गए हैं। पुरानी कूपन व्यवस्था पूरी तरह खत्म कर दी गई है। अब पीएम पोषण पोर्टल के जरिए डिजिटल तरीके से खाद्यान्न का आवंटन किया जाएगा। राशन मिलने के बाद संबंधित स्कूल के शिक्षक पोर्टल पर ही डिजिटल पावती दर्ज करेंगे। जिलों और विकासखंडों के कामकाज की निगरानी के लिए उनके प्रदर्शन से जुड़े संकेतक (परफॉर्मेंस इंडिकेटर) भी पीएम पोषण पोर्टल पर सार्वजनिक किए जाएंगे।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)